राँची जिला के इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इतिहास शिक्षण की स्थिति: एक अध्ययन

Niharika Kumari[1]* Dr. Anant Jha[2]

[1] Research Paper, Sunrise University, Alwar, Rajasthan

[2] Research Supervisor, Sunrise University, Alwar, Rajasthan

सार संक्षेप:- मानव ने प्राचीन काल से ही अपनी बौद्धिक चातुर्यता के बल पर सफलता और विकास के सोपाणों की यात्रा प्रारम्भ की है, जिसमें शिक्षा मानव का मूल साधन है। शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास व प्रगति का संकेतक होती है, जो उसे सभ्य, सुसंस्कृत नागरिक के रूप में विकसित, पुष्पित और पल्लवित करती है। समाज और व्यक्ति होनो केग लिए शिक्षा ही वह मूल साधन है जिसके द्वारा आदर्श नागरिकों के निर्माणों की नींव रखी जाती है। शिक्षा या ज्ञान का कक्षा कक्ष में शिक्षकों द्वार शिक्षण व्यव्यस्था के द्वारा होता है जो प्रारंभिक अवस्था से शुरू होकर आगे तक प्रविष्ट होता है। अतः स्वभाविक है कि कक्षा कक्ष में शिक्षकों द्वारा अपनाये जाने वाले शिक्षण पद्धति आधुनिक संसाधनों, उपकरणों, उपागमों, सहायक सामग्रियों से युक्त हो जो प्रभावी शिक्षण की संकल्पनाओं का सकारात्क रूप प्रदान कर सके। प्रस्तुत शोध-पत्र इतिहास विषय की प्रभावी शिक्षण व्यवस्था को ध्यान में रखकर राँची जिला के इन्टरमिडिएट कॉलेजों एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों के इतिहास विषय में ग्रामीण एवं शहरी स्तर पर कराये जा रहे शिक्षण व्यवस्था पर आधारित है।

कूँजी शब्द:- इतिहास शिक्षण, उपागम, कौशल व घटकों का उपयोग, शिक्षक की योग्यता, सहायक शिक्षण सामग्री व प्रशासकीय क्षमता आदि।

---------------------------------X---------------------------------

प्रस्तावना:-

मानव सम्यता और संस्कृति की विकास यात्रा में नैतिक एवं शाश्वत मूल्यों की जीवंतता बनाये रखने के लिए इतिहास विषय का ज्ञान, अध्ययन और अध्यापन तथा इतिहास विषय का शिक्षण प्रसार आवश्यक है। इतिहास विषय का शिक्षण सतत् विकास नागरिक एवं सामाजिक लोकतन्त्र के लिए आवश्यक है क्योंकि यह वैश्विक स्तर पर राष्ट्रों व्यक्तियें उनके विचारों परम्पराओं शिक्षण अतीत के वर्णन द्वारा वर्तमान का स्पष्टीकरण करता है और भविष्य के लिए सकारात्मक मार्ग प्रशस्त करता है। वर्तमान समय में प्रचलित शिक्षा प्रणाली हमें अंग्रेजों से विरासत में मिली है और शिक्षण पद्धति में नवीनता का अभाव है। शिक्षण पद्धति के विषय में हमारे मूर्धन्य, विचार को है कि शिक्षण की पूर्णता तब तक सिद्ध नही होगी जब तक ये छात्रों में स्वावलम्बन, सामाजिक सद्भाव व्यक्तित्व वचीत्र निर्माण जैसे लक्ष्यों की पूर्ति ना कर ले। आज आवश्यकता इस बात की है कि इतिहास शिक्षण में नवीन प्रेरणा और आदर्शों को रखकर कक्षा कक्ष में आधुनिक संसाधनों, उपकरणों, उपाकमों, सहायक सामग्रियों के सहयोग से बालकों को अधिगम कराया जाना चाहिए जिससे प्रभावी शिक्षण की संकल्पलाओं को साकार किया जा सकें।

समस्या कथन:-

"राँची जिला के ग्रामीण एवं शहरी इन्टरमिडिएट कॉलेजों एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इतिहास विषय की प्रभावी शिक्षण की स्थिति-एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन"

www.ignited.in

शोध अध्ययन के उद्देश्य:-

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य:-

1. ग्रामीण एवं शहरी इन्टमिडिएट कॉलेजों एवं +2 उच्च उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इतिहास शिक्षण व्यवस्था के विषय में जानकारी प्राप्त करना।
2. ग्रामीण एवं शहरी इन्टमिडिएट कॉलेजों एवं +2 उच्च उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इतिहास शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों एवं सहायक सामग्रियों की उपलब्धता का पता लगाना।
3. ग्रामीण एवं शहरी इन्टमिडिएट कॉलेजों एवं +2 उच्च उच्च माध्यमिक विद्यालयों के इतिहास शिक्षकों की योग्यताओं के विषय में जानकारी प्राप्त करना।
4. ग्रामीण एवं शहरी इन्टमिडिएट कॉलेजों एवं +2 उच्च उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इतिहास शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले अध्यापन कौशलों का अध्ययन करना।
5. ग्रामीण एवं शहरी इन्टमिडिएट कॉलेजों एवं +2 उच्च उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत इतिहास के विद्यार्थियों की उपलब्धि का अध्ययन करना।
6. ग्रामीण एवं शहरी इन्टमिडिएट कॉलेजों एवं +2 उच्च उच्च माध्यमिक विद्यालयों की कक्षाओं में इतिहास शिक्षकों द्वारा प्रयुक्त कौशलों के घटकों की संख्या, घटकों के प्रयोग की गुणवता की मात्रा के योग तथा घटकों के प्रयोग की आवृत्ति के योग का विद्यार्थियों की उपलब्धि से यह सम्बन्ध ज्ञात करना।

अध्ययन विधि:-

प्रस्तुत शोध का वर्तमान से समबन्ध होने के कारण शोध अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या:-

जनसंख्या के अन्तर्गत राँची जिले के वे सभी ग्रामीण एवं शहरी इन्टमिडिएट कॉलेजों एवं +2 उच्च उच्च माध्यमिक विद्यालयों सम्मिलित की गई है जहाँ पर इतिहास विषय का शिक्षण कक्षा 11वी एवं 12वीं स्तर पर हो रहा हैं।

न्यादर्श:-

राँची जिले के जिन ग्रामीण एवं शहरी इन्टमिडिएट कॉलेजों एवं +2 उच्च उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इतिहास शिक्षण हो रहा है उनमे से 20 विद्यालयों का चयन यादृच्छिकी न्यादर्शन विधि से किया गया है। इन्हीं विद्यालयों के इतिहास शिक्षकों तथा छात्रों से दत्त संग्रह किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण:-

प्रस्तुत अध्ययन को सम्पादित करने हेतु निम्न उपकरणों का निर्माण शोधकर्ता द्वारा स्वयं किया गया है -

(क) इतिहास शिक्षण कौशल निरीक्षण अनुसूची (H.T.S.O.S.)

(ख) उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इतिहास शिक्षण - शिक्षकों के लिए एक प्रश्नावली

(ग) इतिहास शिक्षण सामग्री-चिन्हांकन सूची

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी प्रक्रिया:-

प्रस्तुत अध्ययन आंकडों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, सह-सम्बन्ध गुणांक तथा प्रतिशत जैसी सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन का सीमांकन:- प्रस्तुत अध्ययन की सीमायें राॅंची जिला को निर्धारित किया गया है। राँची जिला के अन्तर्गत 19 ब्लॉक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी इन्टमिडिएट कॉलेजों एवं +2 उच्च उच्च माध्यमिक विद्यालयों को ही इस शोध के अध्ययन हेतु सम्मिलित किया गया है तथा उनसे प्राप्त दत्तों के आधार पर शोध निष्कर्ष निकाले गये है।

तालिका 1

प्रखण्ड के अनुसार राँची जिला के ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालय का विवरण जहाँ इतिहास विषय की पढ़ाई होती है।

क्र. सं.	प्रखण्ड का नाम	इन्टरमिडिएट कॉलेज /2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों की कुल संख्या	शहरी इन्टरमिडिएट कॉलेज/2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों की संख्या	ग्रामीण इन्टरमिडिएट कॉलेज/2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों की संख्या	योग
1.	राँची	16	16	00	16
2.	काँके	02	02	00	02
3.	रातु	02	00	02	02
4.	माण्डर	03	00	03	03
5.	बेड़ों	02	00	02	02
6.	अनगडा	03	01	02	03
7.	बुडमू	02	00	02	02
8.	बून्डू	04	02	02	04
9.	चान्हों	05	00	05	05
10.	इटकी	02	00	02	02
11.	खेलारी	02	00	02	02
12.	लापूंग	03	00	03	03
13.	नामकोम	01	01	00	01
14.	नगडी	01	00	01	01
15.	ओरमांझी	03	03	00	03
16	राहे	02	00	02	02
17	सिल्ली	03	00	03	03
18	सोनाहातु	01	00	01	01
19	तमाड़	03	00	03	03
	कुल योग				60

तालिका 1 को देखने से स्पष्ट होता है कि राँची जिला में कुल 60 ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालय में इतिहास शिक्षण की मान्यता राज्य सरकार के द्वारा दी गई हैं। इन 60 विद्यालयों से सूचना प्राप्त की गई कि किन किन विद्यालयों में इतिहास की शिक्षण हो रही हैं। इनमें से 37 तथा 23 ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इतिहास शिक्षण होने की बात स्वीकार की गई। 10 राजकीय डिग्री कॉलेजों तथा 05 सम्बद्ध डिग्री कॉलेजों से इतिहास शिक्षण होने की सूचना प्राप्त तो हुई किन्तु इन कॉलेजों को न्यादर्श में शामिल नहीं किया गया है क्योंकि कक्षा 11 वीं एवं 12 वीं स्तर की प्रभावी इतिहास शिक्षण व्यवस्था को जानने के लिये इन कॉलेजों को उपयुक्त नहीं समझा गया। इसलिए प्रस्तुत शोध में राँची जिला के ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेजा एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों को दत्त संग्रहण के लिये चुना गया। अतः 23 इण्टरमीडिएट कॉलेजों एवं 37 +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों (कुल 60) में से ही 20 ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिकी विधि से किया गया है। इन 20 ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कुल 20 इतिहास शिक्षक कार्यरत है। कार्यरत सभी 20 शिक्षकों से दत्त संग्रह किया गया तथा इन विद्यालयों के झारखण्ड इण्टरमीडिएट शिक्षा परिषद, राँची 2017 की परीक्षा में बैठे 1604 इतिहास के छात्रों के प्राप्तांकों को छात्रों की उपलब्धि के रूप में लिया गया।

तालिका- 2

ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इतिहास शिक्षण व्यवस्था का विवरण

क्र.सं.	सामग्री	कॉलेज/2 विद्यालयों की संख्या	कॉलेज/2 विद्यालयों का (जिनमें सामग्री है) प्रतिशत
1.	इतिहास कक्ष	06	30
2.	कक्ष संख्या (1)	06	30
3.	सूचना पट्ट	14	70
4.	श्याम पट्ट	20	100
5.	मैप स्टैण्ड	07	35
6.	शो–केस	03	15
7.	अलमारियाँ	14	70
8.	टेलीवीजन	05	25
9.	प्रोजेक्टर	02	10
10.	वीसीआर	00	00
11.	पुस्तकालय	20	100
12.	पुस्तकालय में छात्रों के बैठने की व्यवस्था	10	50
13.	इतिहास विषय की पत्रिका	03	15
14.	इतिहास विषय सम्बन्धी व्यय की व्यवस्था	02	10
15.	इतिहास विषय सम्बन्धी व्यय की व्यवस्था हेतु वित्तीय व्यवस्था	02	10
16.	इतिहास शिक्षण हेतु शुल्क	00	00
17.	शुल्क का उपयोग (सहायक सामग्री क्रय हेतु)	00	00

इन कॉलजों/विद्यालयों के जिस कक्ष में इतिहास शिक्षण हो रहा था, उस कक्ष में उपलब्ध सुविधाओं पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि सूचना पट्ट 14 कॉलजों/विद्यालयों (70 प्रतिशत) में ही उपलब्ध था। अलमारियाँ 14 कॉलजों/विद्यालयों (70 प्रतिशत) में ही उपलब्ध थीं। शो केस 03 कॉलजों/विद्यालयों (15 प्रतिशत) में ही उपलब्ध थे। श्याम पट्ट सभी 20 कॉलजों/विद्यालयों में उपलब्ध था। मैपस्टैण्ड 07 कॉलजों/विद्यालयों (35 प्रतिशत) में ही उपलब्ध था। टेलीवीजन 05 कॉलजों/विद्यालयों (25 प्रतिशत) में ही उपलब्ध था। वीडियो किसी कॉलजों/विद्यालयों में नहीं था। प्रोजेक्टर वीसीआर 02 कॉलजों/विद्यालयों (10 प्रतिशत) में ही उपलब्ध था। पुस्तकालय सभी 20 कॉलजों/विद्यालयों में ही थे परन्तु पुस्तकालय में बैठकर पढ़ने की सुविधा मात्र 10 कॉलजों/विद्यालयों (50 प्रतिशत) में ही थी। इतिहास विषय से सम्बन्धित पत्रिकायें मात्र 03 कॉलजों/विद्यालयों (15 प्रतिशत) में ही आती थीं। ऐतिहासिक यात्रा की व्यवस्था मात्र 02 (10 प्रतिशत) कॉलजों/विद्यालयों में ही की जाती थी। इन कॉलजों/विद्यालयों में भी भ्रमण हेतु किसी भी प्रकार की वित्तीय सहायता छात्रों को नहीं प्रदान की जाती थी। इतिहास शिक्षण के लिए अलग से शुल्क किसी कॉलजों/विद्यालयों में नहीं लिया जाता था।

www.ignited.in

समय सारणी

तालिका-3

ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इतिहास शिक्षण हेतु विभिन्न कक्षाओं ने नियत कालांशों का विवरण

कक्षा	11		12		योग	
चक्र	कॉलेज/विद्यालयों की संख्या	प्रतिशत की संख्या	कॉलेज/विद्यालयों की संख्या	प्रतिशत	कॉलेज/विद्यालयों	प्रतिशत
प्रथम	3	15	5	25	08	20
द्वितीय	2	10	1	05	03	75
तृतीय	1	05	3	15	04	10
चतुर्थ	4	20	2	10	06	15
पंचम	3	15	1	05	04	10
षष्ठम	2	10	5	25	07	17.5
सप्तम	1	05	2	10	03	7.5
अष्ठम	4	20	1	05	05	12.5
योग	20	100	20	100	40	100

चतुर्थ तालिका 3 को देखने से स्पष्ट होता है कि कक्षा 11 में चतुर्थ एवं अष्टम चक्र में इतिहास शिक्षण हेतु निर्धारित कुल कालांशों के लगभग 40 प्रतिशत कालांश निश्चित किये गये। प्रथम एवं पंचम चक्र में इतिहास शिक्षण हेतु निर्धारित कुल कालांशों का लगभग 30 प्रतिशत कालांश निर्धारित किया गया था। चतुर्थ एवं अष्टम चक्र शिक्षण की दृष्टि में कम उपयोगी होते हैं क्योंकि इनमें छात्र थके रहते हैं। कक्षा 12 में प्रथम एवं षष्टम चक्र में 50 प्रतिशत कालांश निर्धारित किये गये थे। तृतीय, चतुर्थ एवं सप्तम चक्र में 35 प्रतिशत कालांश इतिहास शिक्षण हेतु निर्धारित किये गये थे।

तालिका 4

इतिहास शिक्षण हेतु नियत कालांशानुसार ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों की संख्या

कक्षा	सप्ताह में 06 कालांश		सप्ताह में 12 कलांश	
	कॉलेज/विद्यालयों की संख्या	कॉलेज/विद्यालयों का प्रतिशत	कॉलेज/विद्यालय की संख्या	कॉलेज/विद्यालयों का प्रतिशत
11	12	60	08	40
12	12	60	08	40

तालिका 4 को देखने से स्पष्ट होता है कि कक्षा 11 में 12 कॉलेज/विद्यालयों में (60 प्रतिशत) में सप्ताह में 06 कालांश तथा अन्य 08 कॉलेज/विद्यालयों (40 प्रतिशत) में सप्ताह में 12 कालांश निर्धारित किये गये थे। कक्षा 12 में 12 कॉलेज/विद्यालयों में (60 प्रतिशत) में सप्ताह में 06 कालांश तथा अन्य 08 कॉलेज/विद्यालयों (40 प्रतिशत) में सप्ताह में 12 कालांश इतिहास शिक्षण हेतु निर्धारित किये गये थे।

तालिका 5

इतिहास शिक्षण हेतु नियत समय में पुस्तकालयी व्यवस्था पर अध्यापकों की राय

क्र. सं.	प्र. प्रश्न संख्या		अध्यापकों की संख्या	अध्यापकों का प्रतिशत
1	05	इतिहास शिक्षण हेतु नियत समय पर्याप्त है।	15	75
2	07	पुस्तकालय में इतिहास की पर्याप्त पुस्तकें हैं।	16	80

तालिका सं. 5 से स्पष्ट होता है कि 15 अध्यापकों (75 प्रतिशत) ने इतिहास शिक्षण हेतु निर्धारित समय को पर्याप्त बताया है। कुल 16 शिक्षकों (80 प्रतिशत) ने ही स्वीकार किया है कि उनके विद्यालय में इतिहास की पर्याप्त पुस्तकें हैं। इससे स्पष्ट होता है कि अधिकांश अध्यापक समय सारणी में इतिहास शिक्षण हेतु निर्धारित समय तथा पुस्तकालय में इतिहास विषय की पुस्तकों की उपलब्धता से संतुष्ट थे।

तालिका- 6

ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इतिहास शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों की उपलब्धता का विवरण

क्र. सं.	उपकरण का नाम	कॉलेज/विद्यालयों की संख्या	कॉलेज/विद्यालयों का प्रतिशत
1	ग्लोब	19	95
2	एटलस	16	80
3	एपिडायस्कोप	01	05
4	लपेट श्याम पट्ट	18	90
5	प्रोजेक्टर	03	15
6	प्रक्षेपी स्लाइडें	03	15
7	ओवर हैड प्रोजेक्टर (ओ.एच.पी.)	02	10

तालिका 6 को देखने से यह ज्ञात होता है कि ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों की कक्षाओं में इतिहास शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों की उपलब्धता की स्थिति अच्छी नहीं थी। ग्लोब 19 कॉलेज/विद्यालयों (95 प्रतिशत) में उपलब्ध था। एटलस 16 कॉलेज/विद्यालयों (80 प्रतिशत) में उपलब्ध था। एपिडायस्कोप मात्र 01 कॉलेज/विद्यालय (05 प्रतिशत) में ही उपलब्ध था। लपेट श्याम पट्ट 18 कॉलेज/विद्यालयों (90 प्रतिशत) में उपलब्ध था। प्रोजेक्टर 03 कॉलेज/विद्यालयों (15 प्रतिशत) में ही उपलब्ध था। प्रक्षेपी स्लाइडें मात्र 03 कॉलेज/विद्यालयों (15 प्रतिशत) में ही उपलब्ध थीं। ओवर हैड प्रोजेक्ट मात्र 02 कॉलेज/विद्यालयों (10 प्रतिशत) में ही उपलब्ध था।

www.ignited.in

तालिका 7 को देखने से ज्ञात होता है कि ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा 11 वीं एवं 12 वीं में इतिहास शिक्षण हेतु उपयोगी मॉडलों की उपलब्धता की स्थिति अत्यन्त सोंचनीय थी। ताजमहल एवं संसद भवन, लालकिला, कुतुबमीनार मॉडल का एक -एक मॉडल ही केवल 01 विद्यालय (5 प्रतिशत) में उपलब्ध था। यद्यपि थोड़े से प्रयास से ही बहुत से मॉडलों का निर्माण शिक्षक स्वयं या छात्रों से करवा कर उनका प्रयोग करके अपने शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बना सकते थे, परन्तु ऐसी स्थिति देखने को नहीं मिली।

तालिका - 7

कॉलेज +2 उच्च माध्यमिक कक्षा में इतिहास शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले समानों की विद्यालयों में उपलब्धता का विवरण

क्र. सं.	मॉडल / मानचित्र	कॉलेज / विद्यालयों की संख्या	कॉलेज / विद्यालयों का प्रतिशत
1.	ताजमहल	01	05
2.	संसद भवन	01	05
3.	लाल किला	01	05
4.	कुतुबमीनार	01	05
5.	विश्व मानचित्र प्राकृतिक	08	40
6.	विश्व मानचित्र राजनैतिक	05	25
7.	विश्व मानचित्र रेखांकित	07	35
8.	विश्व जल मार्ग प्राकृतिक	08	40
9.	विश्व जल मार्ग राजनैतिक	05	25
10.	विश्व जल मार्ग रेखांकित	05	25
11.	यूरोप का मानचित्र प्राकृतिक	08	40
12.	यूरोप का मानचित्र राजनैतिक	05	25
13.	यूरोप का मानचित्र रेखांकित	03	15
14.	ऐशिया का मानचित्र प्राकृतिक	09	45
15.	ऐशिया का मानचित्र राजनैतिक	04	20
16.	ऐशिया का मानचित्र रेखांकित	04	20
17.	भारत का मानचित्र प्राकृतिक	11	55
18.	भारत का मानचित्र राजनैतिक	11	55
19.	भारत का मानचित्र रेखांकित	11	55
20.	बंगाल का मानचित्र प्राकृतिक	02	10
21.	बंगाल का मानचित्र राजनैतिक	02	10
22.	बंगाल का मानचित्र रेखांकित	02	10
23.	पंजाब का मानचित्र प्राकृतिक	04	20
24.	पंजाब का मानचित्र राजनैतिक	03	15
25.	पंजाब का मानचित्र रेखांकित	03	15

इतिहास शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले मानचित्र, रेखाचित्र के उपलब्धता की स्थिति अच्छी नहीं हैं। मानचित्र से संबंधित अन्य सामानों की भी मात्रा पर्याप्त नहीं थी। इस प्रकार से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों इतिहास शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले मॉडल तथा मानचित्रों की उपल्पब्धता की स्थिति संतोषजनक नहीं थीं।

तालिका 8

में ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्‌यालयों कक्षा में इतिहास शिक्षण हेतु उपयोगी चित्रों की उपलब्धता का विवरण प्रस्तुत किया गया हैं

क्र. स.	सामानों का नाम	विद्यालयों की संख्या	विद्यालयों का प्रतिशत
01.	प्रमुख तीर्थ स्थानों के चित्र	05	25
02.	विभिन्न नगरों के चित्र	06	30
03.	प्रमुख धर्मों से संबंधित चित्र	06	30
04.	सिक्ख धर्म गुरुओं के चित्र	09	45
05.	पाषाण कालीन हथियारों के चित्र	09	45
06.	उत्तर पाषाण कालीन हथियारों के चित्र	08	40
07.	नव पाषाण कालीन हथियारों के चित्र	07	35
08.	सिंधु घाटी नगर योजना के चित्र	06	30
09.	विभिन्न बाहरी आक्रमणकारियों के चित्र	06	30
10.	मौर्य शासकों, सिक्कों, मुद्राओं के चित्र	04	20
11.	गुप्त शासकों, सिक्कों, मुद्राओं के चित्र	04	20
12.	विभिन्न कालों के विदेशी यात्रियों के चित्र	02	10
13.	राजपूत कालीन प्रमुख इमारतों के चित्र	02	10
14.	राजपूत प्रमुख शासकों राजाओं के चित्र	06	30
15.	सल्तनत कालीन शासकों के चित्र	09	45
16.	सल्तनत कालीन प्रमुख व्यक्तियों के चित्र	06	30
17.	मुगल कालीन प्रमुख शासकों के चित्र	07	35
18.	मुगल कालीन प्रमुख व्यक्तियों के चित्र	07	35
19.	प्रमुख मुगल कालीन इमारतों के चित्र	15	75
20.	प्रमुख मराठा शासकों के चित्र	12	60
21.	हैदर अली का चित्र	08	40
22.	टीपू सुल्तान का चित्र	04	20
23.	1857 की क्रांति से पूर्व के गर्वनर जनरलों के चित्र	02	10
24.	1857 की क्रांति से बाद के वायसरायो के चित्र	02	10
25.	1857 की क्रांति से प्रमुख नतृत्वों कर्ताओं के चित्र	17	85
26.	प्रमुख फ्रांसीसी सेनापतियों के चित्र	02	10
27.	प्रमुख समाज सुधारकों के चित्र	06	30
28.	आजादी के प्रमुख उदारवादी नायकों के चित्र	16	80
29.	आजादी के प्रमुख उग्रवादी नायकों के चित्र	06	30
30.	आजादी के प्रमुख क्रांतिकारी नायकों के चित्र	18	90
31.	स्वतंत्रता आंदोलन की प्रमुख घटनाओं के चित्र	06	30
32.	अंग्रेजों द्वारा निर्मित प्रमुख इमारतों के चित्र	08	40

तालिका 8 से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इतिहास शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले चित्रों की उपलब्धता की स्थिति ठीक नहीं थी। इतिहास के प्रमुख मुगलकालीन इमारतों के चित्र विशेष कर लाल किला, ताजमहल आदि 20 में से 15 कॉलेजों/ विद्यालयों (75 प्रतिशत) में उपलब्ध थे। आजादी के प्रमुख क्रातिकारियों के चित्र मुख्यता भगत सिंह आजाद आदि 18 कॉलेज/विद्यालयो (90 प्रतिशत) कॉलेजों/विद्यालयो में उपलब्ध थे। आजादी के प्रमुख उदारवादियो के चित्र मुख्यता गाँधी, नेहरु, शास्त्री, अम्बेडकर आदि 16 कॉलेजों/विद्यालयों (80 प्रतिशत) में उपलब्ध थे। 1857 ईसवी की क्रांति के प्रमुख भारतीय नेतृत्व कर्ताओं के चित्र मुख्यता रानी लक्ष्मीबाई 17 कॉलेज/विद्यालयो (85 प्रतिशत) में उपलब्ध थे। शेष सभी चित्रों की उपलब्धता 50 प्रतिशत से भी कम थी। यह उपलब्धता दर्शाता है कि ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में चित्रों की उपलब्धता की स्थिति अत्यंत देनीय है।

तालिका 9 में ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इतिहास कक्ष में प्रयुक्त होने वाले खण्ड अ समय ग्राफ संबंधी चार्टों की उपलब्धता को दर्शाया गया है। जहाँ मार्य शासन सम्बंधी चार्ट 25 प्रतिशत

www.ignited.in

कॉलेजों/विद्यालयों में, पाषाण कालीन संबंधी चार्ट 35 प्रतिशत कॉलेजों/विद्यालयों में, गुप्त कालीन शासन संबंधी चार्ट 20 प्रतिशत कॉलेजों/विद्यालयों में, प्रमुख वंशों के शासन संबंधित चार्ट 30 प्रतिशत कॉलेजों/विद्यालयों में, आक्रमणकारियों संबंधी चार्ट, दिल्ली सल्तनत के वंश सबंधी चार्ट 10 प्रतिशत कॉलेजों/विद्यालयों में, मुगल वंश संबंधित चार्ट व विभिन्न गर्वनर जनरलों का 1857 ई. की क्रांति से पूर्व शासन का चार्ट मात्र 30 प्रतिशत कॉलेजों/विद्यालयों, विभिन्न गर्वनर जनरलों का 1857 ई. की क्रांति के बाद शासन संबंधित चार्ट मात्र 10 प्रतिशत कॉलेजों/विद्यालयों में ही उपलब्ध थे। इसी प्रकार खण्ड ब में प्रपुख वंशावली से संबंधी चार्ट को दर्शाया गया है, जहाँ प्रमुख प्राचीन कालीन वंश, प्रमुख मध्यकालीन वंश, युद्ध योजनाएं तथा युद्धों से संबधित मॉडल मात्र 10 प्रतिशत कॉलेजों/विद्यालयों में उपलब्ध थे।

तालिका 9

में इतिहास शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले चार्टों की उपलब्धता का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

क्र. सं.	चार्ट का नाम कॉलेज/विद्यालयों की संख्या		कॉलेज/विद्यालयों का प्रतिशत
अ.	**समय ग्राफ**		
1.	मौर्य शासन सम्बंधी	05	25
2.	पाषाण काल सम्बन्धी	07	35
3.	गुप्त शासन सम्बन्धी	03	15
4.	प्रमुख वंशों के शासन सम्बन्धी	04	20
5.	आक्रमणकारियों सम्बन्धी	06	30
6.	दिल्ली सल्तनत के वंश सम्बन्धी	02	10
7.	मुगल वंश सम्बन्धी	02	10
8.	विभिन्न गर्वनर जनरलों का 1857 ई. की क्रांति के पूर्व शासन	06	30
9.	विभिन्न गर्वनर जनरलों का 1857 ई. की क्रांति के बाद शासन	06	30
ब.	**वंशावली**		
1.	प्रमुख प्राचीन कालीन वंश	02	10
2.	प्रमुख मध्य कालीन वंश	02	10
3.	युद्ध योजनाय	02	10
4.	मॉडल	02	10

ऐसा नहीं है कि उक्त चार्ट किसी भी विद्यालय में उपलब्ध नहीं होते है किन्तु यहाँ पर इतिहास शिक्षण कक्ष में विशेष रुप से इन चार्टों को नही पाया गया जब कि जो चार्ट की सूची है उसे बडी सरलता और सहजता से इतिहास शिक्षण कक्ष में अध्यापकों और छात्रों के सहयोग से रखा जा सकता है तथा उसका सही उपयोग शिक्षण की दिशा में किया जा सकता है किन्तु ऐसा देखने में नहीं मिला।

तालिका 10 को देखने से स्पष्ट होता है कि विभिन्न ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों कक्षाओं में इतिहास शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले उपकरण एवं सहायक सामग्रियों का मध्यमान 22.4 तथा मानक विचलन 16.49 पाया गया। इससे यह पता चलता है कि जहाँ इनकी संख्या कम थी, वहीं पर विभिन्न कॉलजों/विद्यालयों में इनकी उपलब्धता में भी काफी असमानता थी। यहाँ पर यह कह देना प्रासंगिक होगा कि चिन्हांकन सूची में कुल 74 उपकरणों एवं सहायक सामग्रियों के नाम थे। उपकरणों पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि विभिन्न विद्यालयों में उपलब्ध उपकरणों की संख्या का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 22.4 एवं 16.49 जो इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि विभिन्न कॉलजों/विद्यालयों में उपकरणों की संख्या में कम अन्तर था। मॉडल एक कॉलजों/विद्यालयों में उपलब्ध था और वहाँ दो कॉडल उपलब्ध थे। इतिहास से संबंधित सामान 14 कॉलजों/विद्यालयों में पाये गए। इसका मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 6.0 एवं 6.03 पाया गया।

चित्र 18 कॉलजों/विद्यालयों में पाये गये। इनका मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 11.55 एवं 8.76 पाया गया। चार्ट कुल 12 कॉलजों/विद्यालयों में उपलब्ध थे। विभिन्न कॉलजों/विद्यालयों में चार्टों की उपलब्धता ना के बराबर थी। जिसका मध्यमान 1.5 एवं मानक विचलन 1.53 पाया गया। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि चार्ट कम ही कॉलजों/विद्यालयों में पाये गए और जहाँ पाये गये वकाँ उनकी संख्या कम ही थी तथा एक कॉलजों/विद्यालयों से दूसरे कॉलजों/विद्यालयों में इसकी उपलब्धता में भी काफी अन्तर था। वंशावली जो इतिहास कक्ष में विभिन्न राजवंशों के बार में जानकारी देने के लिए परमावश्यक साधन है, इसके माध्यम से विभिन्न राजवंशों के बार में जानकारी दिया जा सकता है, मात्र 05 कॉलजों/विद्यालयों में थे। विभिन्न कॉलजों/विद्यालयों में इनकी उपलब्धता का मध्यमान 0.5 एवं मानक विचलन 1.04 पाया गया। युद्ध योजना का विभिन्न आक्रमणकारियों की सफलता के कारणों को समझाने का महत्वपूर्ण माध्यम है, यह मात्र दो कॉलजों/विद्यालयों में उपलब्ध थे।

तालिका 10

प्रयुक्त होने वाले उपकरणों एवं सहायक सामग्रियों का विद्यालयानुसार विवरण।

क्र. सं.	कॉलजों / विद्यालयों का नाम	उपकरणों की संख्या	माडलों की संख्या	सामानों की संख्या	चित्रों की संख्या	चार्टों की संख्या	फर्नीचर	किताबों की संख्या	योग
1	संत अना इंटर महाविद्यालय पुरुलिया रोड, राँची	00	00	00	00	00	00	00	00
2	+2 अमर शहीद ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव जिला स्कूल, राँची	03	00	10	24	06	01	00	44
3	छोटा नागपुर राजकीय .+2 उच्च विद्यालय रातु, राँची	03	00	04	11	01	00	00	19
4	उर्सूलाइन इंटर महाविद्यालय, राँची	03	00	04	11	01	00	00	19
5	राजकीय बालिका +2 उच्च विद्यालय बरियातु, राँची	03	00	04	11	01	00	00	19
6	राजकीय .+2 उच्च विद्यालय काँके, राँची	02	00	00	10	01	00	00	13
7	हंसराज बधवा +2 उच्च विद्यालय नामकोम, रॉची	04	00	16	15	03	01	00	39
8	राम मनोहर लोहीया +2 उच्च विद्यालय उमेडन्डा बुडमू, राँची	04	00	03	07	00	00	00	14
9	एस.एस.+2 उच्च विद्यालय ककरीया लापुंग, रॉची	03	00	00	10	01	00	00	14
10	जनता+2 उच्च विद्यालय खेलारी, रॉची	04	00	03	07	00	00	00	14
11	शंकरी +2 उच्च विद्यालय इटकी, रॉची	03	00	03	07	00	00	00	13
12	+2 उच्च विद्यालय पिस्का नगडी, रॉची	05	00	03	06	00	00	00	14
13	एस.एस. +2 उच्च विद्यालय ओरमांझी, रॉची	02	02	00	01	00	00	00	05
14	एस.एस. +2 उच्च विद्यालय राहे, रॉची	03	00	00	01	00	00	00	04
15	एस.एस. +2 उच्च विद्यालय सिल्ली, रॉची	03	00	00	00	00	00	00	03
16	बेथेसदा महिला इंटर महाविद्यालय, राँची	03	00	13	14	02	00	01	24
17	मारवाडी +2 उच्च विद्यालय, राँची	04	00	16	20	02	04	00	46
18	संत पॉल्स इंटर मिडिएट महाविद्यालय चर्च रोड़ बहुबाजार, राँची	03	00	20	30	06	02	00	61
19	प्रोजेक्ट +2 उच्च विद्यालय टॉगर बसली माण्डर, राँची	03	00	07	30	00	00	00	41
20	कमला नेहरु इंटर महाविद्यालय टाटीसिल्वे, रॉची	04	00	14	16	05	02	01	42
	विद्यालयों की संख्या	20	01	14	18	12	04	02	
	मध्यमान	3.1	0.1	6.0	11.55	1.5	0.5	0.1	22.4
	मानक विचलन	.95	.44	6.03	8.76	1.53	1.04	.3	16.49

इतिहास शिक्षकों की शैक्षिक योग्यता- ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों के इतिहास शिक्षकों की शैक्षिक योग्यता को तालिका 11 अ एवं 11 ब में दर्शाया गया है।

तालिका -11 (अ) इतिहास अध्यापकों की शैक्षिक योग्यताएं

क्र. सं.	परीक्षा का नाम	अध्यापकों की संख्या	संस्थागत परीक्षा		व्यक्तिगत / पत्राचार परीक्षा		प्रथम श्रेणी		द्वितीय श्रेणी		तृतीय श्रेणी	
			उत्तीर्ण संख्या	अध्यापक प्रतिश्त	उत्तीर्ण संख्या	अध्यापक प्रतिशत	उत्तीर्ण संख्या	अध्यापक प्रतिशत	उत्तीर्ण संख्या	अध्यापक प्रतिशत	उत्तीर्ण संख्या	अध्यापक पतिशत
1	माध्यमिक	20	19	95	01	05	03	15	14	70	03	15
2	इण्टरमीडिएट	20	19	95	01	05	04	20	13	65	03	15
3	स्नातक	20	15	75	05	25	01	05	17	85	02	10
4	स्नातकोत्तर	19	11	57.90	08	42.10	00	00	17	89.47	02	10.53
5	एम0 एड0	02	01	100	01	–	01	50	01	50	–	–
6	अन्य बी0टी0	02	02	100	–	–	–	00	02	100	–	–

तालिका -11 (ब)

क्र. सं.	परीक्षा का नाम	अध्यापकों की संख्या	अध्यापकों का प्रतिशत	प्रा. सै.	प्रति.	प्रा. सै.	प्रति.	प्रा. सै.	प्रति.	प्रा. सै.	प्रति.	प्रा. सै.	प्रति.
1	बी0 एड0	16	80	2	12.5	05	31.25	06	37.5	03	18.75	–	–

तालिका 11 (अ) को देखने से ज्ञात होता है कि कुल 20 अध्यापकों में से 19 (95 प्रतिशत) अध्यापकों ने संस्थागत एवं एक अध्यापक (5 प्रतिशत) ने व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण की थी। इण्टरमीडिएट में 19 अध्यापकों ने संस्थागत एवं एक अलयापक (5 प्रतिशत) ने व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में उच्च माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण की थी। स्नातक परीक्षा में 15 अध्यापकों (75 प्रतिशत) ने संस्थागत एवं 5 अध्यापकों (25 प्रतिशत) ने व्यक्तिगत विद्यार्थी के रूप में अध्ययन किया। स्नातकोत्तर/परास्नातक कक्षा में 19 अध्यापकों में से 11 अध्यापकों (57.89 प्रतिशत) ने संस्थागत तथा 8 अध्यापकों (42.11 प्रतिशत) ने व्यक्तिगत विद्यार्थी के रूप में अध्ययन किया था। अतः स्पष्ट होता है कि परास्नातक कक्षा के अध्ययन हेतु 42.10 प्रतिशत अध्यापकों को मात्र पाठ्यपुस्तकों के ज्ञान तक ही सीमित रहना पड़ा। एस.टी. सी. मात्र 02 अध्यापकों ने किया था एवं दोनों ही संस्थागत विद्यार्थी के रूप में अध्ययन किया था। 02 अध्यापक एम.एड. की डिग्री धारक भी थे। जिनमें से एक ने संस्थागत विद्यार्थी के रूप में अध्ययन किया था एवं एक ने व्यक्तिगत विद्यार्थी के रूप में पत्राचार से एम.एड. की डिग्री ली थी।

ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 20 इतिहास अध्यापकों में से 03 अध्यापकों (15 प्रतिशत) ने माध्यमिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी। अन्य अध्यापकों में 14 (70 प्रतिशत) ने द्वितीय श्रेणी में एवं 03 (15 प्रतिशत) अध्यापकों ने माध्यमिक परीक्षा तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण की थी। उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 20 अध्यापकों में 04 अध्यापकों (20 प्रतिशत) ने परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी एवं 13 अध्यापकों (65 प्रतिशत) ने द्वितीय श्रेणी एवं 03 (15 प्रतिशत) अध्यापकों ने तृतीय श्रेणी में उच्च माध्यमिक विद्यालयों परीक्षा उत्तीर्ण की थी। 20 अध्यापकों में मात्र 01 अध्यापक (05 प्रतिशत) ने ही स्नातक परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी। 17 (85 प्रतिशत) अध्यापकों ने द्वितीय एवं 02 अध्यापकों (10 प्रतिशत) ने तृतीय श्रेणी में स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की थी। 19 अध्यापकों ने एम.ए. किया था जिनमें 17 अध्यापकों (89.47) ने द्वितीय एवं 02 अध्यापकों (10.53 प्रतिशत) ने तृतीय श्रेणी में परास्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की थी। 02 अध्यापकों ने एस.टी.सी. की डिग्री ली थी एवं दोनों ही द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण थे। एम.एड. उपाधि दो अध्यापकों के पास थी जिनमें से एक अध्यापक ने पत्राचार माध्यम से द्वितीय श्रेणी में एवं एक ने संस्थागत रूप से प्रथम श्रेणी में एम.एड. परीक्षा उत्तीर्ण की थी।

तालिका 11 (ब) को देखने से ज्ञात होता है कि 20 अध्यापकों में से 16 अध्यापकों (80 प्रतिशत) ने बी.एड. किया था। बी.एड. की प्रायोगिक एवं सैद्धान्तिक दोनों परीक्षाओं को 02 (12.5 प्रतिशत) अध्यापकों ने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया

www.ignited.in

था। 16 अध्यापकों में से प्रायोगिक में प्रथम एवं सैद्धान्तिक में द्वितीय श्रेणी 05 अध्यापकों (31.25 प्रतिशत) ने प्राप्त की थी। दोनों ही परीक्षाओं में द्वितीय श्रेणी 06 अध्यापकों (37.5 प्रतिशत) अध्यापकों ने प्राप्त की थी। 03 अध्यापकों (18.75 प्रतिशत) ने प्रयोगात्मक में द्वितीय एवं सैद्धान्तिक परीक्षा में तृतीय श्रेणी प्राप्त की थी। इस प्रकार उपरोक्त विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि अधिकतर इतिहास शिक्षकों की शैक्षिक योग्यताएँ ठीक थीं एवं अधिकतर अध्यापक प्रशिक्षण प्राप्त थे।

तालिका 12

इतिहास विषय के अध्यापकों हेतु शिक्षण के अतिरिक्त अन्य कार्यों का विवरण

क्र. सं.	कार्यभार का नाम	अध्यापकों की संख्या	अध्यापकों का प्रतिशत
1.	प्रशासनिक कार्य	12	60
2.	अनुशासन समिति के सदस्य का कार्य	18	90
3.	खेलकूद	10	50
4.	स्काउट–गाइड	06	30
5.	वाद–विवाद	12	60
6.	एन.सी.सी.	02	10
7.	पत्रिका का सम्पादन	12	60
8.	सांस्कृतिक कार्यक्रम	16	80
9.	प्रवेश सम्बन्धी कार्य	20	100
10.	कक्षा अध्यापक का कार्य	20	100
11.	अन्य कर्य	12	60
	(i) आप शिक्षक संघ के सदस्य हैं	20	100
	(ii) क्या आपका काफी समय शिक्षक संघ के कार्यों में लगता है?	02	10
12.	क्या इन कार्यों के फलस्वरूप घरेलू दायित्वों के निर्वाह में कठिनाई होती है?	08	40

सभी 20 अध्यापक शिक्षक संघ के सदस्य थे। 02 अध्यापकों (10 प्रतिशत) ने स्वीकार किया, उनका काफी समय शिक्षक संघ के कार्य में व्यतीत होता है। इन कार्यों के फलस्वरूप 08 अध्यापकों (40 प्रतिशत) ने स्वीकार किया कि उन्हें घरेलू दायित्वों के निर्वहन में कठिनाई होती है। अतः स्पष्ट होता है कि शिक्षण के अतिरिक्त इतिहास अध्यापकों पर अन्य कार्यों का भार भी था और कुछ शिक्षक इन कार्यों के फलस्वरूप घरेलू दायित्वों के निर्वाह में कठिनाई अनुभव करते थे।

इतिहास शिक्षक के गुण - ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों के इतिहास शिक्षकों का दृष्टिकोण उनकी क्षमताएँ, रूचियाँ, विश्वास, कौशल, ज्ञान किस सीमा तक इस श्रेणी का है कि वे सफल इतिहास शिक्षक के रूप में काम कर सकते हैं, इसको जानने का प्रयास प्रश्नावली के खण्ड 'य' के 13 प्रश्नों के द्वारा किया गया। इस खण्ड के प्रश्न गुण-युग्मों के रूप में दिये गये हैं। प्रत्येक गुण युग्म में से एक गुण विशिष्ट रूप से इतिहास शिक्षक के लिए सार्थक था। इस खण्ड में उनके द्वारा दिये गये सार्थक गुणों के प्रति उत्तरों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसको तालिका 15 में दर्शाया गया है।

तालिका 13

इतिहास शिक्षकों में, इतिहास अध्यापक के विभिन्न गुणों की उपलब्धता का विवरण

क्र. सं.	गुणों का नाम	अध्यापकों की संख्या	अध्यापकों प्रतिशत
1.	सामाजिक दृष्टिकोण	19	95
2.	र्राष्ट्रीयता में विश्वास	18	90
3.	प्रयोगजन्य ज्ञान में विश्वास	18	90
4.	छात्रों ने जिज्ञासा पैदा करने की क्षमता	15	75
5.	घर के बाहर के क्रिया कलापों में रूचि	18	90
6.	सभी देशों में विषय में अध्ययन	19	95
7.	निर्देशन देने की योग्यता	18	90
8.	सुचित्र बनाने का कौशल	10	50
9.	वस्तुनिष्ठ अवलोकन की क्षमता	16	80
10.	बाह्य जगत की विविधता में रूचि	15	75
11.	वैज्ञानिक तर्कों द्वारा तथ्यों के स्पष्टीकरण की क्षमता	15	75
12.	पारिवारिक तथ्यों के स्पष्टीकरण की क्षमता	10	50
13.	शैक्षिक भ्रमण द्वारा ज्ञानार्जन में रूचि	16	80

तालिका 13 को देखने से ज्ञात होता है कि 20 अध्यापकों में से 19 अध्यापकों (95 प्रतिशत) ने समाजिक दृष्टिकोण एवं सभी देशों के विषय में अध्ययन गुण को अपने में अधिक माना। इसी प्रकार क्षेत्रीयता में विश्वास की तुलना में र्राष्ट्रीयता में विश्वास, घर के बाहर के क्रियाकलापों में रूचि, निर्देशन देने की योग्यता का गुण 18 अध्यापकों (90 प्रतिशत) में पाया गया तथा प्रयोगजन्य ज्ञान भी 18 अध्यापकों (90 प्रतिशत) में पाया गया। ये गुण इतिहास शिक्षक के सार्थक गुण थे। छात्रों में जिज्ञासा पैदा करने की क्षमता का गुण, बाह्य जगत की विविधता में रूचि, वैज्ञानिक तर्कों पर आधारित तथ्यों के स्पष्टीकरण की क्षमता का गुण 15 अध्यापकों (75 प्रतिशत) में पाया गया। सुचित्र बनाने का कौशल एवं स्थानीय इतिहास की जानकारी का कौशल का गुण 10 अध्यापकों (50 प्रतिशत) में पाया गया। वस्तुनिष्ठ अवलोकन की क्षमता एवं शैक्षिक भ्रमण द्वारा ज्ञानार्जन में रूचि का गुण 16 अध्यापकों (80 प्रतिशत) में पाया गया।

अतः हम देखते हैं कि जहाँ पर सामाजिक दृष्टिकोण सभी देशों के विषय में अध्ययन र्राष्ट्रीयता में विश्वास, घर के क्रिया-कलापों में रूचि, निर्देशन क्षेत्र की योग्यता, वस्तुनिष्ठ अवलोकन की क्षमता, शैक्षिक भ्रमण द्वारा ज्ञानार्जन में रूचि का गुण अधिकांश अध्यापकों में पाये गये, वहीं पर छात्रों में जिज्ञासा पैदा करने की क्षमता, सुचित्र बनाने का कौशल, बाह्य जगत की विविधता में रूचि, सामाजिक तथ्यों के

स्पष्टीकरण की क्षमता एवं पारिवारिक इतिहास की जानकारी जैसे महत्वपूर्ण गुण कम अध्यापकों में पाये गये।

कॉलेजों/उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इतिहास शिक्षकों के छात्रों के साथ सम्बन्ध, उनमें निहित गुणों तथा इतिहास के प्रति अभिवृत्ति का विवरण-

इस अनुच्छेद में ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों के इतिहास शिक्षकों का छात्रों के साथ सम्बन्ध, उनमें निहित इतिहास शिक्षक के गुण तथा इतिहास के प्रति उनकी अभिवृत्ति का विश्लेषण किया गया है।

प्रश्नावली के खण्ड 'द' में शिक्षक- छात्र-सम्बन्ध से सम्बन्धित 13 कथन दिये गये हैं। इन कथनों द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है कि शिक्षक का छात्रों के साथ सम्बन्ध कैसा है? यथा - 'पुराने छात्रों से मिलने पर मैं उनका हाल-चाल अवश्य पूछता हूँ।' इन कथनों का उत्तर शिक्षक को पूर्णतः सत्य, अंशतः सत्य तथा पूर्णतः असत्य इन तीन विकल्पों में से एक को चुनकर देना था। इस खण्ड का अधिकतम सम्भव प्राप्तांक 39 है। इसी प्रकार प्रश्नावली के खण्ड 'य' में माध्यमिक विद्यालयों के इतिहास शिक्षकों में निहित इतिहास शिक्षक के गुणों को जानने हेतु 13 प्रश्न, गुण युग्मों के रूप में दिये गये हैं। इस खण्ड का महत्तम सम्भव प्राप्तांक '13' है। प्रश्नावली के खण्ड 'र' में इतिहास के बारे में माध्यमिक विद्यालयों के इतिहास शिक्षकों की राय को जानने हेतु 19 कथन दिये गये हैं। इन कथनों का उत्तर अध्यापकों को पांच विकल्पों - पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत, एवं पूर्णतः असहमत में से एक को चुनकर देना था। इस खण्ड का महत्तम सम्भव प्राप्तांक 95 है। ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों विद्यालयों के शिक्षकों का छात्रों के साथ सम्बन्ध उनमें निहित इतिहास शिक्षक के गुण तथा इतिहास के प्रति अभिवृत्ति का विवरण तालिका - 14 में प्रस्तुत किया गया है-

तालिका-14

इतिहास शिक्षकों में निहित इतिहास शिक्षक के गुण छात्रों से उनके सम्बन्ध एवं इतिहास के प्रति अभिवृत्ति का विवरण

क्र.सं.	नाम	मध्यमान	मानक विचलन
1.	शिक्षक–छात्र सम्बन्ध	33.65	4.50
2.	इतिहास शिक्षक के गुण	9.75	1.97
3.	इतिहास के प्रति अभिवृत्ति	77.6	4.

तालिका 14 को देखने से ज्ञात होता है कि शिक्षक का छात्रों के साथ सम्बन्ध का मध्यमान 33.65 एवं मानक विचलन 4.50 पाया गया। जबकि महत्तम सम्भव प्राप्तांक 39 था। यह इस बात को स्पष्ट करता है कि शिक्षक, छात्रों के साथ काफी अच्छा सम्बन्ध रखते थे, अर्थात् वे अधिकतर छात्रों को पहचानते थे, उनके नाम से जानते थे। साथ ही साथ यह भी पाया गया कि विभिन्न अध्यापकों के छात्रों के साथ सम्बन्धों में भिन्नता थी।

इसी तालिका से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों के इतिहास शिक्षकों में निहित इतिहास शिक्षक के गुणों का मध्यमान 9.75 एवं मानक विचलन 1.97 पाया गया। इसका महत्तम सम्भव प्राप्तांक 13 था। यह इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों के इतिहास शिक्षकों में, इतिहास शिक्षक के गुण सामान्य से अधिक मात्रा में थे, और एक अध्यापक से दूसरे अध्यापकों में इन गुणों की उपलब्धता में अधिक अन्तर नहीं था। इतिहास के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति का मध्यमान 77.6 एवं 4.02 पाया गया, जबकि महत्तम सम्भव प्राप्तांक 95 था, अतः स्पष्ट होता है कि इतिहास अध्यापकों की इतिहास के प्रति अभिवृत्ति अच्छी थी किन्तु विभिन्न अध्यापकों में यह समान नहीं थी बल्कि अन्तर था

ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इतिहास शिक्षण में प्रयुक्त शिक्षण कौशल

'ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इतिहास अध्यापकों द्वारा प्रयुक्त इतिहास शिक्षण कौशल के विभिन्न घटकों के प्रयोग की आवृत्ति एवं गुणवत्ता का वर्णन इस अनुच्छेद में किया गया है।

तालिका 15 के अनुसार प्रत्येक इतिहास अध्यापक के चार कालांशों के निरीक्षण से पाया गया कि प्रस्तावना कौशल के सभी घटकों का प्रयोग अध्यापकों द्वारा किया गया है। प्रस्तावना कौशल के तीनों घटकों छात्रों के पूर्व ज्ञान का प्रयोग किया गया, प्रकरण की प्रस्तावना में प्रश्नों/प्रासंगिक कथनों का प्रयोग किया गया, प्रस्तावना प्रश्नों से छात्रों की अनुक्रिया प्राप्त की गयी, का सभी 20 अध्यापकों (100 प्रतिशत) द्वारा प्रयोग किया गया। प्रस्तावना कौशल के घटक-छात्रों के पूर्व ज्ञान का प्रयोग किया गया, के प्रयोग की आवृत्ति सर्वाधिक पाई गई। इसका मध्यमान 11.35 तथा मानक विचलन 2.03 पाया गया। अर्थात् औसतन एक अध्यापक ने चार कालांशों में 11.35 बार इस घटक का प्रयोग किया, साथ ही साथ विभिन्न अध्यापकों के प्रयोग की मात्रा में विविधता थी। प्रस्तावना कौशल के घटक छात्रों की अनुक्रिया प्राप्त की गयी,

www.ignited.in

के प्रयोग की आवृत्ति सबसे कम थी। इसका मध्यमान 11.20 एवं मानक विचलन 3.08 पाया गया। अर्थात एक अध्यापक ने चार कालांशों में इस घटक का प्रयोग 11.20 बार किया और विभिन्न अध्यापकों के प्रयोग की आवृत्ति में विविधता थी। गुणवत्ता की दृष्टि से घटक पूर्व ज्ञान का प्रयोग किया गया, का प्रयोग सबसे अधिक सफलतापूर्वक किया गया। इसका मध्यमान 03.18 एवं मानक विचलन 0.59 पाया गया। अर्थात् गुणवत्ता की दृष्टि से इस घटक के प्रयोग का स्तर अच्छा था और विभिन्न अध्यापकों के प्रयोग की गुणवत्ता में विविधता थी। घटक-प्रश्नों-प्रासंगिक कथनों का प्रयोग किया गया, के प्रयोग की गुणवत्ता भी अच्छी थी तथा विभिन्न अध्यापकों द्वारा इसके प्रयोग में काफी विविधता थी। अतः कहा जा सकता है कि विभिन्न अध्यापकों द्वारा प्रस्तावना कौशल के विभिन्न घटकों के प्रयोग में गुणवत्ता की दृष्टि से जहां समानता थी, वहीं प्रयोग की आवृत्ति की दृष्टि से काफी विविधता थी।

तालिका 15

कॉलेजों/उच्च माध्यमिक कक्षा में चार कालांशों में विभिन्न विद्यालयों के इतिहास शिक्षकों द्वारा प्रयुक्त शिक्षण कौशल के घटकों का विवरण

कौशल का नाम	क्र. सं.	घटकों का नाम	अध्यापक		प्रयुक्त घटकों की आवृति का विवरण		प्रयुक्त घटकों की गुणवत्ता का विवरण	
			कुल संख्या	अध्यापक प्रतिशत	मध्यमान	उ०मा० विद्यालय	मध्यमान	उ०मा० विद्यालय
प्रस्तावना कौशल	1	छात्रों के पूर्व ज्ञान का प्रयोग किया गया ।	20	100	11.35	02.03	03.22	00.62
	2	प्रकरण की प्रस्तावना में प्रश्नों/प्रांसगिक कथनों का प्रयोग किया गया।	20	100	11.30	01.93	03.09	01.02
	3	प्रस्तवना प्रश्नों से छात्रों की अनुक्रिया प्राप्त की गई।	20	100	11.20	03.08	03.18	00.59
व्याख्या कौशल	4	तुल्य तथ्यों/वस्तुओं में सम्बन्ध स्थापित किया गया।	20	100	09.90	01.25	03.02	00.75
	5	प्ररम्भिक कथनों का प्रयोग किया गया।	20	100	08.05	02.52	03.11	00.81
	6	पाठ्यवस्तु का स्पष्ट रुप से प्रस्तुत किया गया।	20	100	03.35	01.13	02.97	00.82
	7	स्पष्ट निष्कर्षात्मक कथनों का प्रयोग किया गया।	20	100	04.60	01.46	02.94	00.63
	8	विषय वस्तु के अनुरुप उपर्युक्त उदाहरण दिये गये।	20	100	11.90	01.77	03.09	00.50
	9	बीच –बीच में प्रश्न पूछे गये।	20	100	12.15	1.53	03.01	00.47
	10	उचित समय पर विराम का प्रयोग किया गया।	20	100	03.20	1.23	03.29	00.49
	11	उचित हाव शव का प्रयोग किया गया।	15	75	11.90	00.78	03.12	00.38
प्रश्न कौशल	12	अलोचनात्मक सजगता जागृत करने हेतु प्रश्न पूछे गये।	15	75	11.05	01.98	02.86	00.57
	13	संकेतात्मक प्रश्न पूछे गये।	19	95	02.55	01.99	02.18	01.20
	14	संक्षिप्त एवं विशिष्ट प्रश्न पूछे गये।	14	70	03.25	01.20	02.57	01.06
श्यामपट्ट कौशल एवं प्रदर्शन कौशल	15	छात्रों के अच्छे उत्तर को श्यामपट्ट पर लिखा गया।	20	100	02.90	00.96	03.07	00.76
	16	श्यामपट्ट पर समयग्राफ/रेखाचित्र/चित्र बनाये गये।	10	50	03.70	01.08	02.73	00.80
	17	समयग्राफ/रेखाचित्र/चित्र सभी छात्रों के देखने योग्य थे।	10	50	02.20	01.67	01.89	01.29
	18	पाठ के मुख्य बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर प्रदर्शित किया गया।	19	95	01.30	01.34	02.80	00.81
	19	मुख्य बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर रेखांकित किया गया।	19	95	03.55	01.23	02.89	00.73
	20	शब्द/वाक्य सीधी रेखा में श्यामपट्ट पर लिखे गये।	19	95	02.65	01.30	02.86	00.78
	21	श्यामपट्ट पर लिखें गये अक्षर पठनीये थे।	19	95	03.45	02.03	02.40	01.03
कक्षा प्रबंध	22	कक्षा प्रबंध एवं कक्षा अनुशासन अच्छा था।	20	100	02.50	00.94	01.82	00.98
सहायक सामग्री का प्रयोग	23	दिखाये गये मानचित्र स्पष्ट थे	10	50	03.65	01.18	01.75	01.21
	24	मनचित्र के मुख्य बिन्दुओं पर छात्रों का ध्यान आकृष्ट किया गया।	8	40	00.70	00.92	01.55	01.13
	25	दिखाये गये मॉडल स्पष्ट थे।	00	00	00.05	00.22	00.05	00.22
	26	मॉडल की मुख्य विशेषताओं पर ध्यान आकृष्ट किया गया।	00	00	00	00	00.10	00.44
	27	दिखाये गये चित्र स्पष्ट थे।	07	35.00	03.00	00.65	00.73	01.02
	28	चित्रों का चयन पाठ के अनुरुप था।	06	30.00	03.00	00.65	00.56	00.91
	29	चित्र के मुख्य बिन्दुओं पर ध्यान आकृष्ट किया गया।	06	30.00	03.00	00.65	00.60	00.96
	30	चार्ट छात्रों के बौद्धिक स्तर के अनुकूल थे।	05	25.00	03.00	00.65	00.58	00.93
	31	छात्रों को दिखाये गये चार्ट स्पष्ट थें।	05	25	0.3	00.65	00.65	01.16
	32	चार्ट के मुख्य बिन्दुओं पर छात्रों का ध्यान आकृष्ट किया गया।	05	25	0.3	00.65	00.69	01.24
	33	चार्ट के माध्यमों से तथ्यों को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया।	05	25	0.3	00.65	00.78	01.07
	34	छात्रों के प्रश्नों का संतोषप्रद उत्तर दिया गया।	18	90	04.65	01.34	02.27	01.00
	35	छात्रों की सहायता से श्यामपट्ट सांराश निर्मित किया गया।	15	75	04.70	01.12	02.24	01.18
गृहकार्य	36	समुचित गृहकार्य दिया गया।	17	85	02.75	0.96	02.37	01.06

व्याख्या कौशल के अधिकाँश घटकों का प्रयोग सभी अध्यापकों द्वारा किया गया। चार कालांशों में इतिहास अध्यापकों द्वारा व्याख्या कौशल के घटक-छात्रों के समझ की जांच के लिए बीच-बीच में प्रश्न पूछ गये- का प्रयोग सबसे अधिक किया गया। इसका मध्यमान 12.15 एवं मानक विचलन 1.53 पाया गया। अर्थात् चार कालांशों में औसतन एक अध्यापक ने इसका प्रयोग लगभग 12 बार किया। मानक विचलन से पता चलता है कि विभिन्न अध्यापकों के प्रयोग की आवृत्ति में अन्तर था। घटक-उचित समय पर विराम का प्रयोग किया गया, का प्रयोग सबसे कम हुआ। इसका मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 3.20 एवं 1.23 पाया गया। अर्थात् इस घटक का प्रयोग चार कालांशों में प्रत्येक अध्यापक द्वारा 3.20 बार किया गया, जो बहुत कम है। विभिन्न अध्यापकों द्वारा इस घटक के प्रयोग में असमानता पाई गई। गुणवत्ता की दृष्टि से व्याख्या कौशल के घटक उचित समय पर विराम का प्रयोग किया गया, का प्रयोग सर्वाधिक सफलतापूर्वक किया गया। इसका मध्यमान 03.29 एवं मानक विचलन 00.49 पाया गया। अर्थात् इस घटक के प्रयोग की गुणवत्ता अच्छी थी तथा विभिन्न अध्यापकों द्वारा इसके प्रयोग के गुणवत्ता की मात्रा में असमानता थी। घटक-स्पष्ट एवं निष्कर्षात्मक कथनों का प्रयोग किया गया का प्रयोग सबसे कम सफलतापूर्वक किया गया। इसका मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 02.95 एवं 0.63 पाया गया। अर्थात् इस घटक के प्रयोग की गुणवत्ता का स्तर अच्छा था। इस विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि व्याख्या कौशल का प्रयोग ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों विद्यालयों में अच्छ हो रहा था। यद्यपि अध्यापकों द्वारा विभिन्न घटकों के प्रयोग की आवृत्ति में काफी अन्तर था, किन्तु गुणवत्ता की दृष्टि से विभिन्न घटकों के प्रयोग में खास अन्तर नहीं पाया गया।

प्रश्न कौशल के घटक-आलोचनात्मक सजगता जागृत करने हेतु प्रश्न पूछे गये का प्रयोग सबसे अधिक पाया गया। इसका मध्यमान 11.05 एवं मानक विचलन 1.98 पाया गया अर्थात् चार कालांशों में औसतन एक अध्यापक ने लगभग 11 बार इसका प्रयोग किया। घटक संकेतात्मक प्रश्न पूछे गये, के प्रयोग की आवृत्ति सबसे कम थी। इसका मध्यमान 2.55 एवं मानक विचलन 1.95 पाया गया। अर्थात औसतन एक अध्यापक ने चार कालांशों में इस घटक का प्रयोग 2.16 बार किया। गुणवत्ता की दृष्टि से आलोचनात्मक सजगता जाग्रत करने हेतु प्रश्न पूछे गये, का प्रयोग सर्वाधिक सफलतापूर्वक हुआ। इसका मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 02.86 एवं 0.58 पाया गया। अर्थात् गुणवत्ता की दृष्टि से इस घटक के प्रयोग का स्तर अच्छा था। घटक-प्रश्नों को पुनः प्रेषित किया गया, का प्रयोग सबसे कम सफलतापूर्वक हुआ।

पुर्नबलन कौशल के घटक छात्रों ने अच्छे उत्तर श्यामपट्ट पर लिखे गये का प्रयोग सभी 20 अध्यापकों (100 प्रतिशत)

www.ignited.in

द्वारा किया गया। इसका मध्यमान 2.90 एवं मानक विचलन .96 पाया गया। अर्थात् कहा जा सकता है कि पुनर्बलन कौशल के घटक का प्रयोग सभी शिक्षकों द्वारा किया गया, परन्तु इसकी आवृत्ति अच्छी नहीं थी। शिक्षकों में चार कालांशों में इस घटक का प्रयोग मात्र लगभग तीन बार किया। गुणवत्ता की दृष्टि से इसका मध्यमान 03.07 एवं मध्यमान 0.66 पाया गया। अर्थात् गुणवत्ता की दृष्टि से यह घटक श्यामपट्ट प्रयोग कौशल के किसी घटक का प्रयोग सभी अध्यापकों द्वारा नहीं किया गया। घटक-पाठ के मुख्य बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर प्रदर्शित किया गया, ध्यान केन्द्रित करने हेतु मुख्य बिन्दुओं को रेखांकित किया गया, शब्द वाक्य सीधी रेखा में लिखे गये और श्यामपट्ट पर लिखे गये अक्षर स्पष्ट और सुडौल थे, का प्रयोग 19 अध्यापकों (95 प्रतिशत) द्वारा किया गया, जिसमें ध्यान केन्द्रित करने हेतु मुख्य बिन्दुओं को रेखांकित किया गया। घटक का मध्यमान शयाम पट्ट कौशल के सभी घटकों में सर्वाधिक 3.55 था एवं मानक विचलन 1.23 था अर्थात् इस घटक का प्रयोग की आवृत्ति शिक्षकों द्वारा चार कालांशों में लगभग 3 या 4 थी। घटक समय ग्राफ/चित्र/रेखाचित्र बनाये गये एवं यह सभी छात्रों के देखने योग्य थे, का प्रयोग 10 अध्यापकों (50 प्रतिशत) द्वारा किया गया। घटक विशिष्ट बिन्दुओं पर रंगीन चाक का प्रयोग किया गया, का प्रयोग 14 अध्यापकों (70 प्रतिशत) द्वारा किया। गुणवत्ता की दृष्टि से श्याम पट्ट कौशल के घटक शब्द/वाक्य सीधी रेखा में लिखे गये का मध्यमान सर्वाधिक 02.86 एवं 0.78 पाया गया। अर्थात् गुणवत्ता की दृष्टि से इस घटक का प्रयोग का स्तर अच्छा था। घटक चित्र/रेखाचित्र/लेख सभी छात्रों के देखने योग्य थे, का प्रयोग सबसे कम सफलतापूर्वक हुआ। इसका मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 01.89 एवं 01.28 था। अर्थात् गुणवत्ता की दृष्टि से इस घटक के प्रयोग का स्तर अच्छा नहीं था। उपरोक्त विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि श्यामपट्ट प्रयोग कौशल के प्रयोग की आवृत्ति एवं गुणवत्ता जहां कम थी, वहीं पर विभिन्न अध्यापकों के प्रयोग में भी आवृत्ति एवं गुणवत्ता की दृष्टि से असमानता विद्यमान थी।

कक्षा-कक्ष प्रबन्ध एवं अनुशासन कौशल से सम्बन्धित दत्तों पर दृष्टिपात करने पर ज्ञात होता है कि इतिहास शिक्षकों के कक्षा अनुशासन सामान्य स्तर का था। इसको बनाने हेतु यद्यपि सभी 20 अध्यापकों (100 प्रतिशत) द्वारा प्रयास किया गया, परन्तु प्रयास भी आवृत्ति कम थी और जो प्रयास किये गये, वे भी गुणवत्ता की दृष्टि से अच्छे नहीं थे।

सहायक सामग्री के चयन एवं प्रयोग कौशल के कुछ ही घटकों का प्रयोग हुआ है। जिन घटकों का प्रयोग हुआ भी है, उनका प्रयोग भी कम अध्यापकों द्वारा किया गया। सबसे अधिक प्रयोग मानचित्र संबंधी घटक का 10 अध्यापकों (50 प्रतिशत) द्वारा किया गया। मॉडलसे सम्बन्धित घटक का प्रयोग किसी अध्यापक द्वारा नहीं किया गया। विषय वस्तु को स्पष्ट करने हेतु चित्र, चार्ट से सम्बन्धित घटकों का प्रयोग भी कम अध्यापकों द्वारा किया गया। घटक-दिखाये गये मानचित्र स्पष्ट थे, का प्रयोग का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 3.63 एवं 1.18 था। अर्थात् चार कालांशों में एक अध्यापक ने औसतन 3.65 बार इस घटक का प्रयोग किया। विभिन्न अध्यापकों द्वारा इस घटक के प्रयोग की आवृत्ति में काफी अन्तर पाया गया। गुणवत्ता की दृष्टि से घटक दिखाये गये मानचित्र स्पष्ट थे, का प्रयोग इस कौशल के घटकों में सबसे अधिक सफलतापूर्वक हुआ। इसका मध्यमान 1.75 एवं मानक विचलन 1.21 पाया गया। अर्थात् इस घटक के प्रयोग का स्तर भी गुणवत्ता की दृष्टि से ठीक नहीं थी।

पाठ समापन कौशल के घटक छात्रों के प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर दिया गया, का प्रयोग सर्वाधिक 18 अध्यापकों (90 प्रतिशत) द्वारा किया गया। इसका मध्यमान 4.65 एवं मानक विचलन 1.34 था। अर्थात् औसतन एक अध्यापक ने इस घटक का प्रयोग चार कालांशों में 4.65 बार किया। घटक समुचित गृहकार्य दिया गया, के प्रयोग की आवृत्ति पाठ समापन कौशल के अन्य घटकों की तुलना में सबसे कम थी। इसका मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 2.75 एवं .96 पाया गया, अर्थात् एक अध्यापक ने चार कालांशों में औसतन इस घटक का प्रयोग 2.75 बार किया। गुणवत्ता की दृष्टि से घटक-छात्रों के प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर दिया गया का प्रयोग सबसे अधिक सफलतापूर्वक किया गया। इसका मध्यमान 2.27 एवं मानक विचलन 1.00 पाया गया। अर्थात् गुणवत्ता की दृष्टि से इस घटक के प्रयोग की गुणवत्ता सामान्य थी। घटक छात्रों की सहायता से श्यामपट्ट सारांश निर्मित किया गया का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 8.96, 4.83 पाया गया जो तीनों घटकों में सबसे कम सफलतापूर्वक प्रयोग किया गया। जिसका स्तर ठीक नहीं था। उपरोक्त विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि पाठ समापन कौशल के घटकों का प्रयोग ठीक हुआ और प्रयोग की गुणवत्ता का स्तर भी लगभग सामान्य था।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इतिहास शिक्षकों द्वारा प्रस्तावना कौशल एवं पुनर्बलन कक्षा प्रबन्ध एवं अनुशासन एवं व्याख्या कौशल का प्रयोग ही सामान्य रूप में किया गया।

www.ignited.in

अन्य किसी भी कौशल का प्रयोग समुचित रूप एवं उचित मात्रा में नहीं किया गया। सहायक सामग्री के चयन एवं प्रयोग कौशल की स्थिति बहुत ही सोचनीय थी। मात्रा की दृष्टि से इस कौशल का प्रयोग बहुत कम हुआ- साथ ही प्रयोग की गुणवत्ता भी बहुत खराब थी। जबकि इतिहास एक ऐसा अध्ययन विषय है, जिसके शिक्षण में पाठ को स्पष्ट एवं रोचक बनाने के लिए अधिक मात्रा में एवं सफलता पूर्वक सहायक सामग्रियों के चयन एवं प्रयोग की आवश्यकता पड़ती है। सहायक सामग्रियों की सहायता के बिना इतिहास विषय की बहुत सी विषय वस्तु को स्पष्ट कर पाना बहुत कठिन होता है। प्रश्न कौशल, श्यामपट्ट प्रयोग, पाठ समापन कौशल के प्रयोग की स्थिति भी ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अच्छी नहीं थी।

उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इतिहास शिक्षकों द्वारा घटकों के प्रयोग का विवरण -

विभिन्न ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों की कक्षाओं में चार कालांशों में इतिहास शिक्षण में प्रयुक्त घटकों की संख्या, घटकों के प्रयोग की आवृत्ति और गुणवत्ता के वितरण को तालिका 4.6.2 में दर्शाया गया है।

तालिका 16 को देखने से ज्ञात होता है कि ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों की कक्षाओं में प्रयुक्त कौशलों के घटकों की संख्या में काफी विषमता थी। 36 घटकों में से सबसे अधिक क्रमशः 31 व 30 घटकों का प्रयोग +2 अमर शहीद ठाकुर शाहदेव जिला स्कूल राँची एवं संत अना इंटर महाविद्यालय पुरुलिया रोड, राँची में हुआ। सबसे कम क्रमशः 21 व 19 घटकों का प्रयोग प्रोजेक्ट +2 उच्च विद्यालय टॉगर बसली माण्डर, राँची, हंसराज बधवा +2 उच्च विद्यालय नामकोम, राँची एवं शंकरी +2 उच्च विद्यालय इटकी, राँची में हुआ। इन सभी ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इतिहास शिक्षण में प्रयुक्त विभिन्न कौशलों के घटकों के प्रयोग का मध्यमान 25.5 एवं मानक विचलन 3.12 पाया गया। इससे इस बात का पता चलता है कि ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इतिहास शिक्षण में लगभग 67 प्रतिशत घटकों का ही प्रयोग हुआ तथा विभिन्न विद्यालयों में घटकों के प्रयोग की संख्या में असमानता थी। चार कालांशों में विभिन्न विद्यालयों में घटकों के आवृत्ति के औसत का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 4.43 एवं 28 पाया गया। इससे यह पता चलता है कि एक ओर जहां इन घटकों के प्रयोग की आवृत्ति कम थी, वहीं पर विभिन्न ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इनके प्रयोग की आवृत्ति भी समान नहीं थी। चार कालांशों में विभिन्न ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इन घटकों का सफलतापूर्वक प्रयोग के औसत का मध्यमान 8.57 एवं मानक विचलन 1.84 पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि गुणात्मक दृष्टि से इन घटकों के प्रयोग का स्तर सामान्य था, साथ ही विभिन्न ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इन घटकों के प्रयोग की गुणवत्ता में समानता थी।

तालिका 16

कॉलेज/उच्च माध्यमिक कक्षा में चार कालांशों में विभिन्न विद्यालयों के इतिहास शिक्षकों द्वारा प्रयुक्त शिक्षण कौशल के घटकों का विवरण

क्र. स.	कॉलेज/+2 उच्च विद्यालयों का नाम	कुल संख्या	मध्यमान	उ0मा0 विद्यालय	मध्यमान	उ0मा0 विद्यालय
1	संत अना इंटर महाविद्यालय पुरुलिया रोड, राँची	30	4.63	4.75	12.47	3.63
2	+2 अमर शहीद ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव जिला स्कूल, राँची	31	4.78	4.64	11.52	4.95
3	छोटा नागपुर राजकीय +2 उच्च विद्यालय रातु, राँची	26	4.63	4.69	11.10	3.66
4	उर्सूलाइन इंटर महाविद्यालय, राँची	27	4.39	4.34	7.59	5.11
5	राजकीय बालिका +2 उच्च विद्यालय बरियातु, राँची	22	4.63	4.29	6.24	5.38
6	राजकीय .+2 उच्च विद्यालय काँके, राँची	21	4.57	4.43	7.22	6.24
7	हंसराज बधवा +2 उच्च विद्यालय नामकोम, रॉची	21	4.39	4.50	6.51	5.79
8	राम मनोहर लोहीया +2 उच्च विद्यालय उमेडन्डा बुडमू, राँची	23	4.23	4.10	7.86	5.62
9	एस.एस.+2 उच्च विद्यालय ककरीया लापुंग, रॉची	28	4.02	3.73	10.04	5.16
10	जनता+2 उच्च विद्यालय खेलारी, रॉची	26	4.47	3.90	10.77	6.51
11	शंकरी +2 उच्च विद्यालय इटकी, रॉची	21	4.15	4.13	6.08	5.26
12	+2 उच्च विद्यालय पिस्का नगडी, रॉची	24	4.57	4.58	6.61	4.71
13	एस.एस. +2 उच्च विद्यालय ओरमांझी, रॉची	25	4.76	4.29	8.71	5.33
14	एस.एस. +2 उच्च विद्यालय राहे, रॉची	29	4.44	4.63	8.44	5.88
15	एस.एस. +2 उच्च विद्यालय सिल्ली, रॉची	26	3.81	4.18	7.91	4.50
16	बेथेसदा महिला इंटर महाविद्यालय, राँची	25	4.13	4.27	8.78	5.91
17	मारवाडी +2 उच्च विद्यालय, राँची	29	4.55	4.57	8.37	5.24
18	संत पॉल्स इंटर मिडिएट महाविद्यालय चर्च रोड़ बहुबाजार, राँची	24	4.63	4.71	10.35	3.83
19	प्रोजेक्ट +2 उच्च विद्यालय टॉगर बसली माण्डर, राँची	19	4.63	4.45	8.25	5.21
20	कमला नेहरु इंटर महाविद्यालय टाटीसिल्वे, रॉची	23	4.18	4.20	6.62	6.95
मध्यमान		25.5	4.43	–	8.57	–
मानक विचलन		3.12	.28	–	1.84	–

ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इतिहास के छात्रों की उपलब्धि - इस अनुच्छेद में ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इतिहास के छात्रों की वैकल्पिक विषयों में उपलब्धि का विषयवार वर्णन किया गया है।

तालिका 17 कॉलेजों/उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इतिहास के छात्रों की विभिन्न वैकल्पिक विषयों में उपलब्धि-

तालिका 17 को देखने से ज्ञात होता है कि ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में विभिन्न विद्यालयों के इतिहास के छात्रों की इतिहास विषय में उपलब्धि का मध्यमान वं मानक विचलन क्रमशः 48.02 एवं 3.99 पाया गया, जबकि इन्हीं छात्रों के सभी विषयों के प्राप्तांकों का प्रतिशत का मध्यमान एवं मानक विचलन

www.ignited.in

क्रमशः 45.46 एवं 4.81 पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि इतिहास में छात्रों की उपलब्धि कुल विषयों की उपलब्धि की तुलना में अच्छी थी और विभिन्न ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की इतिहास की उपलब्धि में काफी समानता थी। अन्य वैकल्पिक विषयों में संगीत का मध्यमान 60.75 एवं मानक विचलन 0.55 पाया गया। संगीत विषय में छात्रों की उपलब्धि, इतिहास के छात्रों की उपलब्धि से अच्छी थी, पायी गयी। कला विषय का मध्यमान 56.67 एवं मानक विचलन 1.59 पाया गया। कला विषय में छात्रों की उपलब्धि इतिहास विषय के छात्रों की उपलब्धि से अच्छी थी। भूगोल विषय में छात्रों की उपलब्धि का मध्यमान 52.04 एवं मानक विचलन 2.69 पाया गया। भूगोल विषय में छात्रों की उपलब्धि इतिहास विषय के छात्रों की उपलब्धि से अच्छी थी। तर्कशास्त्र विषय मे छात्रों की उपलब्धि का मध्यमान 50.11 एवं मानक विचलन 2.75 था। तर्कशास्त्र विषय में छात्रों की उपलब्धि इतिहास विषय के छात्रों की उपलब्धि से अच्छी थी। भूगोल, संगीत एवं तर्कशास्त्र चारों विषयों में छात्रों की उपलब्धि इतिहास में अच्छी थी। कला, भूगोल, संगीत एवं तर्कशास्त्र चारो विषय प्रयोगात्मक हैं। संस्कृत का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 47.02 एवं 05.05 पाया गया। अर्थशास्त्र विषय का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 44.63 एवं 5.3 पाया गया। नागरिक शास्त्र विषय में मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 46.25 एवं 3.59 पाया गया समाजशास्त्र विषय में मध्यमान एवं मानक विचलन 46.24 एवं 6.28 पाया गया। इन चारांे विषयों में छात्रों की उपलब्धि इतिहास विषय में छात्रों की उपलब्धि से कम थी। तथा विभिन्न विद्यालयों के छात्रों की उपलब्धि में इतिहास की तुलना में काफी समानता थी। अंग्रेजी में उपलब्धि का मध्यमान 42.9 एवं मानक विचलन 5.78 पाया गया। अंग्रेजी विषय में छात्रों की उपलब्धि तालिका में सब विषयों में सबसे कम थी। मनोविज्ञान विषय में छात्रों की उपलब्धि का मध्यमान 48.1 एवं मानक विचलन 1.77 पाया गया।

तालिका 17

कॉलेजों +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इतिहास के छात्रों की विभिन्न वैकल्पिक विषयों में उपलब्धि का विवरण

क्र.सं.	विद्यालय का नाम	इतिहास	ना. शा.	भूगोल	संस्कृत	अंग्रेजी	अर्थ शास्त्र	मनो वि.	तर्क शा.	स. शा.	कला	संगीत	कुल प्राप्त अंक
1	संत अना इंटर महाविद्यालय पुरुलिया रोड, राँची	52.61	50.73	61.32	49.34	41.73	43.00	–	–	48.32	–	–	47.13
2	+2 अमर शहीद ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव जिला स्कूल, राँची	53.62	49.34	–	47.76	38.79	55.72	–	–	52.00	–	–	49.54
3	छोटा नागपुर राजकीय .+2 उच्च विद्यालय रातु, राँची	50.12	48.00	55.20	45.25	45.33	49.54	–	–	52.50	–	–	48.63
4	उर्सूलाइन इंटर महाविद्यालय, राँची	48.35	40.00	48.86	43.25	47.09	41.73	–	–	50.60	–	–	46.13
5	राजकीय बालिका +2 उच्च विद्यालय बरियातु, राँची	48.60	47.53	48.90	47.13	43.55	41.85	53.70	56.50	58.00	–	–	42.03
6	राजकीय .+2 उच्च विद्यालय काँके, राँची	40.23	46.25	43.63	41.40	25.33	48.60	–	52.00	48.55	–	–	36.39
7	हंसराज बधवा +2 उच्च विद्यालय नामकोम, राँची	39.69	47.45	–	47.50	41.32	45.33	–	–	38.00	56.00	–	–
8	राम मनोहर लोहीया +2 उच्च विद्यालय उमेडन्डा बुडमू, राँची	46.73	45.56	48.75	46.52	41.32	45.33	–	–	36.50	–	–	44.37
9	एस.एस.+2 उच्च विद्यालय ककरीया लापुंग, राँची	42.69	40.26	–	43.38	42.52	49.00	–	–	40.50	–	–	40.34
10	जनता+2 उच्च विद्यालय खेलारी, राँची	48.68	44.67	–	38.79	51.09	45.15	–	–	41.59	–	–	44.05
11	शंकरी +2 उच्च विद्यालय इटकी, राँची	52.21	44.73	–	45.33	41.04	47.17	–	–	50.30	–	–	46.38
12	+2 उच्च विद्यालय पिस्का नगडी, राँची	49.60	39.67	49.50	–	38.69	46.17	–	–	38.66	–	–	49.04
13	एस.एस. +2 उच्च विद्यालय ओरमांझी, राँची	51.38	50.14	–	46.09	51.67	46.23	–	–	38.00	–	–	50.96
14	एस.एस. +2 उच्च विद्यालय राहे, राँची	52.38	50.26	52.43	45.00	45.00	35.03	–	–	53.25	52.00	–	46.95
15	एस.एस. +2 उच्च विद्यालय सिल्ली, राँची	49.83	51.26	–	47.76	58.95	50.59	–	40.00	43.52	–	–	48.25
16	बेथेसदा महिला इंटर महाविद्यालय, राँची	46.23	46.26	50.84	55.63	39.52	56.29	–	–	39.42	62.00	62.50	44.25
17	मारवाडी +2 उच्च विद्यालय, राँची	47.24	47.76	49.60	40.00	35.33	40.12	–	–	43.65	–	–	45.65
18	संत पॉल्स इंटर मिडिएट महाविद्यालय चर्च रोड बहुबाजार, राँची	46.21	43.00	–	59.93	40.40	38.79	42.50	52.26	51.23	–	–	–
19	प्रोजेक्ट +2 उच्च विद्यालय टाँगर बसली माण्डर, राँची	51.23	46.95	52.50	55.63	35.85	33.50	–	–	53.65	–	–	43.62
20	कमला नेहरु इंटर महाविद्यालय टाटीसिल्वे, राँची	48.72	50.26	53.00	47.76	45.02	46.29	–	–	46.60	–	–	50.25
विद्यालयों की संख्या		20	20	12	19	20	20	02	04	20	03	02	47
मध्यमान		48.02	46.25	52.04	47.02	42.09	44.43	42.01	50.19	46.24	56.67	60.75	45.46
मानक विचलन		3.99	3.59	2.69	5.09	5.78	5.03	1.77	2.75	6.28	1.59.	0.55	3.01

छात्रों की इतिहास में उपलब्धि एवं शिक्षण सम्बन्धी विभिन्न चरों में सह-सम्बन्ध -

इस अनुच्छेद में ग्रामीण एवं शहरी इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की इतिहास में उपलब्धि एवं इतिहास शिक्षण सम्बन्धी विभिन्न चरों के मध्य सहसम्बन्ध का वर्णन किया गया है।

तालिका 18 कॉलेजों +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की इतिहास में उपलब्धि एवं शिक्षण सम्बन्धी विभिन्न चरों में सहसम्बन्ध-

कॉलेजों +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की इतिहास में उपलब्धि एवं शिक्षण सम्बन्धी विभिन्न चरों के मध्य सह-सम्बन्ध के विवरण को तालिका 18 में दर्शाया गया है।

तालिका 18

कॉलेजों +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की इतिहास में उपलब्धि एवं इतिहास सम्बन्धी विभिन्न चरों के मध्य सह-सम्बन्ध

क्र.सं.	चर का नाम	सह–सम्बन्ध गुणांक
1.	इतिहास अध्यापकों द्वारा प्रयुक्त घटकों की संख्या एवं छात्रों की उपलब्धि में सह –सम्बन्ध	0.567
2.	इतिहास अध्यापकों द्वारा प्रयुक्त घटकों की गुणवत्ता एवं छात्रों की उपलब्धि में सह– सम्बन्ध	0.173
3.	इतिहास अध्यापकों द्वारा प्रयुक्त घटकों की आवृत्ति एवं छात्रों की उपलब्धि में सह –सम्बन्ध।	0.365
4.	इतिहास अध्यापकों के शिक्षण अनुभव एवं छात्रों की उपलब्धि में सह –सम्बन्ध	0.299
5.	इतिहास अध्यापकों में निहित इतिहास शिक्षक के गुण एवं छात्रों की उपलब्धि में सह– सम्बन्ध	−0.186
6.	शिक्षक–छात्र सम्बन्ध एवं छात्रों की उपलब्धि में सह –सम्बन्ध	−0.389
7.	इतिहास अध्यापकों की इतिहास के प्रति अभिवृत्ति एवं छात्रों की उपलब्धि में सह–सम्बन्ध	0.214
8.	विद्यालयों में इतिहास शिक्षण हेतु उपलब्ध उपकरण, एवं सहायक सामग्रियों की संख्या एवं छात्रों की उपलब्धि में सह –सम्बन्ध	−0.174

कॉलेजों +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की इतिहास में उपलब्धि एवं शिक्षण सम्बन्धी विभिन्न चरों के मध्य सहसम्बन्ध के विवरण को तालिका 18 में दर्शाया गया है। इस तालिका को देखने से ज्ञात होता है कि कॉलेजों +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों स्तर के इतिहास विषय के शिक्षण के समय शिक्षकों द्वारा प्रयुक्त घटकों की संख्या एवं छात्रों की इतिहास विषय की उपलब्धि में सह-सम्बन्ध गुणांक 0.567 पाया गया। यह गुणांक 0.01 स्तर पर सार्थक हैं। अतः कहा जा सका है कि शिक्षकों द्वारा प्रयुक्त घटकों की संख्या एवं छात्रों की इतिहास विषय में उपलब्धि में सार्थक सम्बन्ध है। इतिहास अध्यापकों द्वारा प्रयुक्त घटकों की गुणवत्ता तथा छात्रों की इतिहास में उपलब्धि में सह-सम्बन्ध गुणांक 0.173 पाया गया। जो यह गुणांक 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि शिक्षकों द्वारा प्रयुक्त घटकों की गुणवत्ता एवं छात्रों की इतिहास विषय में उपलब्धि में सह-सम्बन्ध नहीं है। इतिहास अध्यापकों द्वारा प्रयुक्त घटकों की आवृत्ति एवं छात्रों की इतिहास विषय में उपलब्धि का सह-सम्बन्ध गुणांक 0.365 पाया गया। यह गुणांक .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि अध्यापकों द्वारा प्रयुक्त घटकों की आवृत्ति एवं छात्रों की उपलब्धि में सम्बन्ध नहीं है। इतिहास अध्यापकों के शिक्षण अनुभव एवं छात्रों की उपलब्धि में सह-सम्बन्ध गुणांक 0.299 पाया गया। यह गुणांक .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि इतिहास अध्यापकों के शिक्षण अनुभवों एवं छात्रों की उपलब्धि में सह-सम्बन्ध नहीं है। इतिहास अध्यापकों में निहित इतिहास शिक्षक के गुण एवं छात्रों की उपलब्धि में सह-सम्बन्ध गुणांक -0.186 पाया गया। यह गुणांक .05 स्तर पर सार्थक नहीं है, अर्थात कहा जा सकता है कि इतिहास अध्यापकों में निहित इतिहास शिक्षक के गुण एवं छात्रों की उपलब्धि में सह-सम्बन्ध नहीं है। शिक्षक छात्र सम्बन्ध एवं छात्रों की उपलब्धि में सह-सम्बन्ध गुणांक -0.389 पाया गया जो कि .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि शिक्षक-छात्र सम्बन्ध एवं छात्रों की उपलब्धि में सह-सम्बन्ध नहीं है। इतिहास अध्यापकों की इतिहास के प्रति अभिवृत्ति एवं छात्रों की उपलब्धि में सह-सम्बन्ध गुणांक 0.214 पाया गया जो कि .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि इतिहास अध्यापकों की इतिहास के प्रति अभिवृत्ति एवं छात्रों की उपलब्धि में सह-सम्बन्ध नहीं है। कॉलेजों +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इतिहास शिक्षण हेतु उपलब्ध उपकरण एवं सहायक सामग्रियों की संख्या एवं छात्रों की उपलब्धि में सह-सम्बन्ध गुणांक 0.174 पाया गया जो कि .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि कॉलेजों +2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इतिहास शिक्षण में उपलब्ध उपकरण एवं सहायक सामग्रियों की संख्या एवं छात्रों की उपलब्धि में सह-सम्बन्ध नहीं है।

तालिका 18 से स्पष्ट होता है कि छात्रों की उपलब्धि एवं इतिहास शिक्षण सम्बन्धी विभिन्न चरों के मध्य सह-सम्बन्ध नहीं है। मात्र इतिहास अध्यापकों द्वारा प्रयोग घटकों की संख्या एवं छात्रों की उपलब्धि के मध्य घनात्मक सह-सम्बन्ध पाया गया। विभिन्न चरों के साथ सार्थक धनात्मक सह-सम्बन्ध के न पाये जाने का सम्भावित कारण राज. बोर्ड की परीक्षा में प्राप्त उपलब्धि की वैधता एवं विश्वसनीयता का अभाव प्रतीत होता है। स्वकेन्द्र एवं परिचित विद्यालयों में केन्द्र होने के कारण परीक्षा प्रणाली सही ढंग से संचालित नहीं होने के कारण भी पास होने वालों का प्रतिशत बढ़ा है, बढ़ती नकल की प्रवृत्ति एवं सही मूल्यांकन के अभाव से ही सम्भवतः उपरोक्त चरों के साथ सार्थक धनात्मक सह-सम्बन्ध नहीं पाया गया।

परिणाम-

इस अध्ययन से प्राप्त परिणामों का विवरण निम्नवत है-

1. राँची जिला के 75 शहरी एवं ग्रामीण इन्टरमिडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च विद्यालयों में से 60 शहरी एवं ग्रामीण इन्टरमिडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च विद्यालयों जहाँ इतिहास विषय में अध्ययन होने की सूचना प्राप्त हुई उनमें से 20 शहरी एवं ग्रामीण इन्टरमिडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च विद्यालयों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया उन 20 शहरी एवं ग्रामीण इन्टरमिडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च

www.ignited.in

विद्यालयों में से इतिहास कक्ष मात्र 06 कॉलेजों/विद्यालयों (30 प्रतिशत) में ही उपलब्ध था। जिन कक्षों में इतिहास शिक्षण हो रहा था, उन कक्षों में मात्र श्यामपट्ट ही सभी 20 कॉलेजों/विद्यालयों (100 प्रतिशत) में पाया गया। अन्य सुविधाएं जैसे मैप स्टैण्ड, शो केस, प्रोजेक्टर, टेलीविजन, चार्ट, मॉडल आदि शून्य से 35 प्रतिशत का कॉलेजों/विद्यालयों में ही पाये गये। पुस्तकालय सभी 20 कॉलेजों/विद्यालयों (100 प्रतिशत) में थे परन्तु उनमें अधिकतर कॉलेजों/विद्यालयों में इतिहास विषय की पर्याप्त पुस्तकें नहीं थीं। पुस्तकालय में बैठकर पढ़ने की सुविधाएँ मात्र 10 कॉलेजों/विद्यालयों (50 प्रतिशत) में ही उपलब्ध थीं। लगभग 25 प्रतिशत अध्यापकों ने स्वीकार किया कि इतिहास शिक्षण हेतु नियत समय पर्याप्त नहीं है। मात्र 03 कॉलेजों/विद्यालयों (15 प्रतिशत) में ही इतिहास विषय से सम्बन्धित पत्रिकाएं आती थीं। केवल 02 कॉलेजों/विद्यालयों (10 प्रतिशत) द्वारा शैक्षिक भ्रमण की व्यवस्था की जाती थी।

2. 20 अध्यापकों में से मात्र 03 अध्यापकों ने माध्यमिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी। 04 अध्यापकों ने शहरी एवं ग्रामीण इन्टरमिडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च विद्यालयों की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी। परास्नातक परीक्षा 19 अध्यापकों में से किसी अध्यापक ने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण नहीं की। 02 अध्यापक एम.एड. की डिग्री धारक थे, जिनमें से एक अध्यापक ने संस्थागत विद्यार्थी के रूप में अध्ययन किया था एवं एक ने पत्राचार माध्यम से एम.एड. की डिग्री ली थी। बी.एड. की डिग्री 20 अध्यापकों में 16 अध्यापकों (80 प्रतिशत) के पास थी एवं प्रशिक्षण के समय 12 अध्यापकों (60 प्रतिशत) ने ही इतिहास विषय में विशेषीकरण किया था।

3. लगभग 60 प्रतिशत अध्यापकों का शिक्षण अनुभव 08 वर्षों से अधिक था। समाचार पत्र सभी अध्यापक पढ़ते थे, किन्तु इतिहास से सम्बन्धित सूचनाओं का संकलन 11 अध्यापकों (55 प्रतिशत) ने करने की बात स्वीकार की। सेमिनार/गोष्ठियों में सम्मिलित होने का अवसर मात्र 03 अध्यापकों (15 प्रतिशत) को ही मिला। आधुनिक इतिहास पढ़ाने में 09 अध्यापकों (45 प्रतिशत) को सबसे ज्यादा आनन्द आता था। प्राचीन इतिहास एवं मध्यकालीन इतिहास पढ़ाने में आनन्द आने वाले अध्यापकों का प्रतिशत क्रमशः 20 एवं 25 था। 11 शिक्षक (55 प्रतिशत) अपने स्थायी घर से विद्यालय आते थे। 12 अध्यापकों (60 प्रतिशत) का आवास विद्यालय से 02 कि.मी. से कम दूरी पर था।

4. 14 अध्यापकों (70 प्रतिशत) को सप्ताह में 25 कालांश से अधिक शिक्षण कार्य करना होता था। शिक्षण कार्य के साथ-साथ कक्षा अध्यापक का कार्य सभी 20 अध्यापकों (100 प्रतिशत) द्वारा किया गया। प्रवेश सम्बन्धी कार्य सभी 20 अध्यापकों (100 प्रतिशत), प्रशासनिक कार्य 12 अध्यापकों (60 प्रतिशत), अनुशासन समिति के सदस्य का कार्य 18 अध्यापकों (90 प्रतिशत), सांस्कृतिक कार्य का संचालन 16 अध्यापक (80 प्रतिशत) तथा खेलकूद, स्काउट गाइड एवं वाद-विवाद का संचालन क्रमशः 10 अध्यापकों (50 प्रतिशत), 6 अध्यापकों (30 प्रतिशत) एवं 12 अध्यापकों (60 प्रतिशत) को करना पड़ता था।

5. ग्लोब 19 कॉलेजों/विद्यालयों (95 प्रतिशत), एटलस 16 कॉलेजों/विद्यालयों (80 प्रतिशत) में उपलब्ध था। एपिडायस्कोप मात्र 01 कॉलेजों/विद्यालयों (05 प्रतिशत) में ही उपलब्ध था जो कि अच्छी स्थिति में नहीं था। लपेट श्यामपट्ट 18 कॉलेजों/विद्यालयों (90 प्रतिशत) में उपलब्ध था। प्रोजेक्टर 03 कॉलेजों/विद्यालयों (15 प्रतिशत) में ही उपलब्ध था। प्रक्षेपी स्लाइडें मात्र 03 कॉलेजों/विद्यालयों (15 प्रतिशत) में ही उपलब्ध थीं। ओवर हैड प्रोजैक्टर (ओ.एच.पी.) मात्र 02 कॉलेजों/विद्यालयों (10 प्रतिशत) में ही उपलब्ध था। शहरी एवं ग्रामीण इन्टरमिडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च विद्यालयों में इतिहास शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले उपलब्ध उपकरणों एवं सहायक सामग्रियों का मध्यमान 22.4 एवं मानक विचलन 16.49 पाया गया। यह तथ्य चिन्हांकन सूची द्वारा ज्ञात किये गये।

6. शहरी एवं ग्रामीण इन्टरमिडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च विद्यालयों के इतिहास शिक्षकों का छात्रों के साथ सम्बन्ध का मध्यमान 33.65 एवं मानक विचलन 4.50, अध्यापकों में निहित इतिहास शिक्षक के गुण का मध्यमान 9.75 एवं मानक विचलन 1.97 तथा इतिहास के प्रति अभिवृत्ति का

www.ignited.in

मध्यमान 77.6 एवं मानक विचलन 4.02 पाया गया। जबकि इनका महत्तम सम्भव प्राप्तांक क्रमशः 39, 13 एवं 95 था।

7. शहरी एवं ग्रामीण इन्टरमिडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च विद्यालयों में शिक्षण के समय अध्यापकों द्वारा प्रस्तावना, पुनर्बलन, कक्षा-प्रबन्ध एवं अनुशासन एवं व्याख्या कौशल का प्रयोग ही सामान्य रूप में किया जा रहा था। अन्य कौशलों का प्रयोग समुचित रूप से एवं उचित मात्रा में नहीं किया जा रहा था। सहायक सामग्रियों के चयन एवं प्रयोग कौशल की स्थिति बहुत ही शोचनीय थी। प्रश्न, पुनर्बलन, श्यामपट्ट प्रयोग, पाठ समापन एवं कक्षा-कक्ष प्रबन्ध कौशल के घटकों के प्रयोग की स्थिति भी आवृत्ति एवं गुणवत्ता की दृष्टि से अच्छी नहीं थी। चार कालांशों में अध्यापकों द्वारा विभिन्न घटकों के प्रयोग की संख्या 21 से 31 के मध्य थी। औसतन लगभग 25.5 घटकों का प्रयोग अध्यापकों द्वारा किया गया।

8. शहरी एवं ग्रामीण इन्टरमिडिएट कॉलेज एव +2 उच्च विद्यालयों में विभिन्न विद्यालयों के छात्रों की इतिहास में कुल उपलब्धि का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 48.02 एवं 03.99 पाया गया।

9. शहरी एवं ग्रामीण इन्टरमिडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च विद्यालयों में इतिहास विषय के छात्रों की इतिहास में उपलब्धि का मध्यमान 48.02 पाया गया। यह उपलब्धि छात्रों के अन्य वैकल्पिक विषयों की उपलब्धि के मध्यमान नागरिक शास्त्र 46.25, अंग्रेजी 42.9, संस्कृत 47.02, समाजशास्त्र 46.24 तथा कुल विषयों के प्राप्तांकों के प्रतिशत के मध्यमान 45.46 से अधिक किन्तु यह भूगोल विषय के मध्यमान 52.04, मनोविज्ञान विषय के मध्यमान 48.1, शिक्षाशास्त्र विषय के मध्यमान 50.19, कला विषय के मध्यमान 56.67 तथा संगीत विषय के मध्यमान 60.75 से कम थी।

निष्कर्ष-

प्राप्त परिणामों के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले गये

1. शहरी एवं ग्रामीण इन्टरमिडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च विद्यालयों में इतिहास विषय की प्रभावी शिक्षण की व्यवस्था अच्छी नहीं थी।

2. शहरी एवं ग्रामीण इन्टरमिडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च विद्यालयों में इतिहास शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले उपकरण एवं सहायक सामग्रियाँ पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं थी।

3. शहरी एवं ग्रामीण इन्टरमिडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च विद्यालयों के इतिहास शिक्षकों की शैक्षिक योग्यताएँ ठीक थी।

4. शहरी एवं ग्रामीण इन्टरमिडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च विद्यालयों के इतिहास शिक्षकों को सेमिनार/गोष्ठियों में भाग लेने का पर्याप्त अवसर प्राप्त नहीं हो सका।

5. इतिहास विषय के अधिकतर अध्यापकों का शैक्षिक अनुभव काफी कम था।

6. शहरी एवं ग्रामीण इन्टरमिडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च विद्यालयों में इतिहास शिक्षकों का कार्यभार अधिक था फिर भी छात्रों के साथ इनके सम्बन्ध अच्छे थे, इनमें इतिहास अध्यापक के गुण पर्याप्त मात्रा में विद्यमान थे। इतिहास विषय के प्रति इनकी अभिवृत्ति भी अच्छी थी।

7. शहरी एवं ग्रामीण इन्टरमिडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च विद्यालयों में इतिहास शिक्षकों द्वारा शिक्षण कौशलों के घटकों का प्रयोग कम किया गया। जिन घटकों का प्रयोग किया भी गया, उनकी आवृत्ति बहुत कम थी तथा गुणवत्ता की दृष्टि से प्रयोग का स्तर सामान्य था।

8. शहरी एवं ग्रामीण इन्टरमिडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च विद्यालयों के छात्रों की इतिहास विषय में उपलब्धि सामान्य थी। साथ ही साथ विभिन्न विद्यालयों के छात्रों की उपलब्धि में समानता पायी गई।

9. शहरी एवं ग्रामीण इन्टरमिडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च विद्यालयों में इतिहास के छात्रों की इतिहास विषय में उपलब्धि भूगोल, शिक्षाशास्त्र, कला एवं

संगीत के अतिरिक्त अन्य सभी वैकल्पिक विषयों से कम थी।

10. शहरी एवं ग्रामीण इन्टरमिडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च विद्यालयों के छात्रों की इतिहास विषय में उपलब्धि एवं इतिहास अध्यापकों की इतिहास के प्रति अभिवृत्ति में सहसम्बन्ध नहीं पाया गया।

11. शहरी एवं ग्रामीण इन्टरमिडिएट कॉलेज एवं +2 उच्च विद्यालयों में इतिहास शिक्षण हेतु उपलब्ध उपकरण एवं सामग्रियों की संख्या एवं छात्रों की उपलब्धि में सहसम्बन्ध नहीं पाया गया।

सन्दर्भ:-

1. चौधरी, के.के. (2000), माध्यमिक विद्यालयों में भूगोल शिक्षण, गीतांजली प्रकाशन, बरेली।

2. सिंह एवं राय (1978), सुक्ष्म शिक्षण, भारत भारती प्रकाशन, वाराणसी।

3. महतो, रानी (2009), गृह विज्ञान शिक्षण, सरस्वती प्रकाशन, अलवर।

4. सिंह टी. (1984), शिक्षण एवं शिक्षण कौशल, भारत भारती प्रकाशन, वाराणसी।

5. राय एवं त्यागी (2001), भावी-शिक्षकों हेतु आधारभूत कार्यक्रम, राधा प्रकाशन मन्दिर, आगरा।

6. शर्मा, आर.ए. (1983), शिक्षण तकनीकी, मॉडर्न पब्लिशर्स, मेरठ।

7. महतो, एस.के. (2007), इतिहास शिक्षण, सरस्वती प्रकाशन, अलवर।

8. पाण्डेय, आर.एस. (2005) भारतीय शिक्षा की रूप रेखा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

Corresponding Author

Niharika Kumari*

Research Paper, Sunrise University, Alwar, Rajasthan